आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 19 | उदयपुर बुधवार 01 नवम्बर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

नई दिल्ली से डॉ. तुक्तक भानावत -

कभी खत्म नहीं होगा क्लासिकल क्रिकेट : कपिलदेव

बुमराह जैसे खिलाड़ी 20 साल पहले होते तो कोच मैदान में ही नहीं आने देते

नई दिल्ली की ताज होटल में वंडर सीमेंट के साथ : 7 क्रिकेट सीजन-2 के शुभारंभ समारोह में पत्रकारों से मुखातिब हुए मशहूर क्रिकेटर कपिलदेव ने कहा कि एक्साइटमेंट क्रिकेट आएगा, खूब देखा व सराहा जाएगा लेकिन जो क्लासिकल क्रिकेट है वो कभी खत्म नहीं होगी। उम्मीद की जानी चाहिए कि बीसीसीआई और आईसीसी पब्लिक के लिए कुछ ऐसा करेंगे कि वो वापस इसकी तरफ लौट आएगी। टेस्ट क्रिकेट कहीं नहीं जाने वाला, वो वहीं रहेगा क्योंकि उसका जो मजा है वो कहीं नहीं है। कपलि ने पत्रकारों के कई सवालों पर चुटकियां ली व मजाकिया अंदाज में क्रिकेट के विभिन्न पहलुओं पर पूछे सवालों का बेबाकी से जवाब दिया। उन्होंने 1983 की विश्वकप विजेता टीम पर बन रही फिल्म के ऑन स्क्रीन हीरो रणबीरसिंह को को इवेंट में लाने के सवाल पर तपाक से कहा कहा 'एक म्यान में दो तलवार ही रह सकती है'।

क्रिकेट की नई नियमावली पर उनका कहना था कि सभी स्पोर्ट्स का मोडिफिकेशन लगातार होते रहना चाहिए। नई सोच के साथ इस खेल के बेटरमेंट के लिए और गेम चेंज के लिए अपग्रेड होते रहना चाहिए। विराट कोहली और धोनी के सवाल पर कपिल ने एक बार फिर कहा कि बाप हमेशा बाप ही रहेगा। हां, बेटा उससे आगे जरूर निकल सकता है। बाप हमेशा चाहेगा कि बेटा मुझसे आगे निकले। पाकिस्तान के साथ क्रिकेट रिश्तों पर बोले कि जीतो, लड़ों मगर खेल को खेल की भावना से खेलो। कोई टीम हमसे बेहतर खेलती है तो उसकी रेस्पेक्ट होनी चाहिए। खेल का जज्बा मायने रखता है। एक टीम ने हमेशा हारना ही होता है।

नई जनरेशन के तेजर्रार क्रिकेट पर कपिलदेव का विचार था कि हमेशा जनरेशन बेहतर होनी चाहिए। जब सुनील गावस्कर ने क्रिकेट छोड़ी थी तब हम कभी सोच भी नहीं सकते थे कि कोई उनका मुकाबला कर सकेंगे। उसके बाद ऐसे क्रिकेटेर आए जिन्होंने ऐसे ही रिकॉर्ड बनाए। सचिन के बारे में भी हम यही सोचते थे। इसलिए हर नई जनरेशन हमसे बेहतर आनी चाहिए। नहीं आती है तो समझ लेना चाहिए कि दुनिया हमसे आगे नहीं जा रही है। रिकॉर्ड टूटने बहुत जरूरी है। पांच साल से एक भी इंटरनेशनल क्रिकेट मैच राजस्थान में नहीं हुआ? सवाल पर कहा कि अगर कोई भी एसोसिएशन विवादों में आती है तो उसकी भी गलती रही होगी। हम चाहते हैं कि क्रिकेट ऐसोसिएशन विवादों से जल्द दूर हो, यहां के क्रिकेटरों को ज्यादा से ज्यादा मौके मिले। यह मिस अडरस्टेंडिंग दूर होनी चाहिए। टेनिस बॉल से क्रिकेट कितना सहीं? सवाल पर उन्होंने कहा टेस्ट, वन-डे, टी-ट्वंटी की तरह ही हमें टेनिस क्रिकेट का भी सम्मान करना चाहिए। हर क्रिकेट का अपना एक खास मजा है। आने वाले समय मे एक दिन टेनिस क्रिकेट का भी वर्ल्ड कप होगा। जब इतने सारे लोग खेलेंगे तो कोई न कोई इसे अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने का बीड़ा जरूर उठाएगा।

उन्होंने चुटकी ली कि धोनी का हेलीकॉप्टर शॉट टेनिस बॉल क्रिकेट में ही खेला जा सकता है। जहां पर पिचेज व सुविधाएं अच्छी नहीं है वहां पर क्रिकेट की बेहतरी के लिए टेनिस बॉल क्रिकेट खेलने में कोई हर्ज नहीं है।

बार-बार बेटिंग ऑर्डर बदलने के सवाल पर कपिल बोले कि बाहर से अनुमान कर सकते हैं, लेकिन जो अंदर टीम में हैं वो सही सोच रहे होंगे। क्रिकेट इतना बड़ा इसलिए है क्योंकि हम सबके पास कुछ न कुछ ओपीनियन है देने के लिए। हम उनको ओपीनियन देते हैं जो इस खेल को बहुत अच्छे से समझते हैं। अगर आपका हाथ कटेगा तो आपसे ज्यादा दर्द मुझे होगा। कुछ चीजें हमें टीम के लिए ही छोड़ देनी चाहिए व उम्मीद करनी चाहिए कि टीम मेंबर जो करेंगे, अच्छा ही करेंगे। आशीष नेहरा की विदाई और 18 साल के उनके शानदार कॅरियर पर कहा कि देश के लिए खेलने वाले हर खिलाड़ी का यही सपना होता है कि जब वह खेल छोड़े तो उसे मान व रेस्पेक्ट से विदाई दी जाए। क्रिकेट में यदि आपको कपिलदेव या उनके करीब किसी करीबी को चुनना है तो किसे चुनेंगे? इस पर कपिल ने कहा कि मैं किसी को कपिल के बराबर आखिर क्यों मानूं?

गेंदबाजी में अपने एक्शन के लिए हमेशा चर्चा में रहने वाले भुवनेश्वर व बूमराह के बारे में कपिल ने बहुत ही साफगोई से कहा कि जब मैंने उन्हें पहली बार देखा तो सोच कि ये कैसे क्रिकेट खेलेंगे? मगर आज तस्वीर बदल गई है। हम यह बात करते हैं कि सिम्पल नहीं, मुश्किल एक्शन वाले ज्यादा क्रिकेट खेल सकते हैं। अगर आप मानसिक रूप से मजबूत हैं तो बहुत बढ़िया खिलाड़ी बन जाते हैं। कॉपी बुक स्टाइल की बात करें तो आज से 20 साल पहले कोच ऐसे खिलाड़ियों को मैदान में भी नहीं आने देता। बीसीसीआई व आरसीए विवाद पर कपिल ने कहा कि क्रिकेट व खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए सबको साथ आकर इसका जल्दी कोई समाधान निकालना चाहिए। कपिल ने इस टूर्नामेंट में बेस्ट क्रिकेटर को एक लाख का पुरस्कार देने की घोषणा करते हुए कहा कि जब हम छोटे थे, हमें पुरस्कार मिलता था तो बहुत खुशी होती थी। आज हम इस जगह पर पहुंच गए हैं कि हम उन्हें पुरस्कार दे पा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इसके फाईनल मैच में 1983 की विजेता टीम के खिलाड़ियों में से कुछ खिलाड़ियों को लाने का प्रयास किया जाएगा।

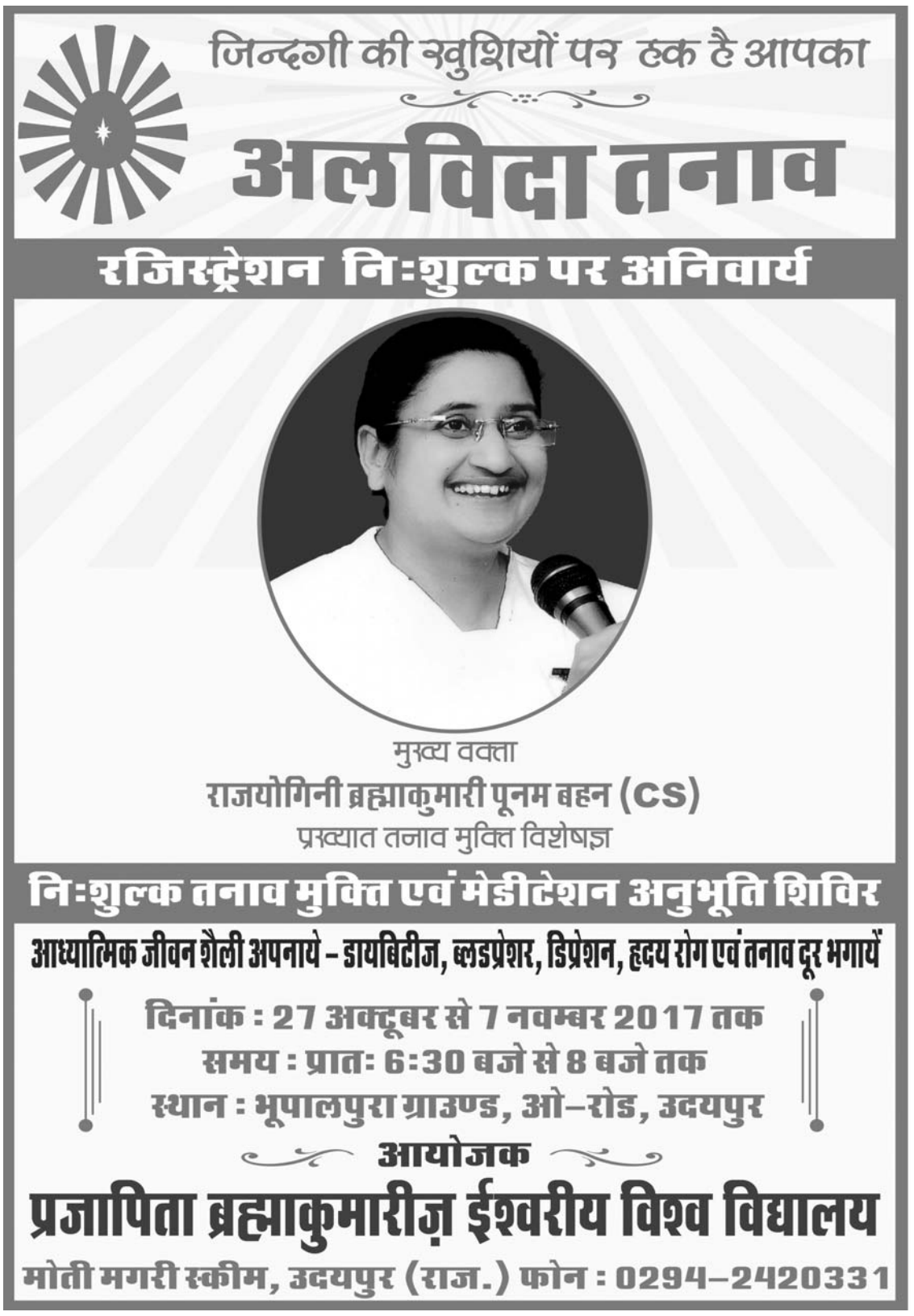

अभी नब्बे का हूं, सौ पूरे करने दो

डॉ. ब्रजमोहन जावलिया से मेरा परिचय सन् 1960 में हुआ। प्राचीन साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, स्थापत्य, लिपि आदि के वे अत्यन्त चौकन्ने, सजग तथा ज्ञान महोदधि हैं।

डॉ. जावलिया के निवास पर डॉ. भानावत की मैत्री संगति

उनका विशाल पुस्तकीय तथा हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह ही सबको चौंकाने वाला है। उदयपुर में 101, भटियाणी चोहट्टा, मामाजी की हवेली के सामने वाली गली में बिल्कुल सामने उनका निवास राजमहलों की विशाल परकोट से स्पर्शित है।

लगभग छह दशक की यादों का पिंडोरा उनका मेरी स्मृति में और मेरा उनकी पसली में बंधा हुआ है। जब मिलते हैं तो बड़े स्नेहिल सींचन में हमारे क्यारे-क्यारे फूल उग आते हैं और हर्षित रोमांटिक सुगंध बिखेरते बावले कर देते हैं। अब 90 की उम्र में भी उनका मन-मस्तिष्क और मैत्री-मिलन ठहाकेदार रहा।

उनसे दो-एक वर्ष पूर्व मिला तब वे थोड़ा कम पर काम चलाऊ सुन लेते थे पर इस बार 30 अक्टूबर की संध्या को जब मिला तो मुझे पाटी और बरतना पकड़ा दिया। वे तो मुझसे बोल कर बात करेंगे पर मुझे अपनी बात उन्हें लिख-लिख कर बतानी होगी। इस बार मैं बिटिया कहानी को साथ ले गया। जावलियाजी बोले भी कि बहुत छोटी थी, फुटबॉल सी, तब इसे देखा था। मिसेज जावलिया ने तो उसे अपने आंचल में ही बांध लिया।

जावलियाजी भी मेरी तरह मसखरे रहे हैं सो जब भी मिलते हैं, मसखरी पर उतर आते हैं। एकबार होली पर उन्होंने कलमतोड़ कई उघाड़े-उघाड़े छन्द लिखे तो मैं उनकी लेखनी का कमाल मान गया। अगरचंदजी नाहटा, मनोहरजी शर्मा, चन्द्रदानजी चारण, सीतारामजी लालस जब कभी इधर आते, मैं जावलियाजी को सूचना देकर बुलावा करता।

मुनि कांति सागर तब भूपालपुरा में रहते। मैं उनसे जब-जब भी मिला, मुझे वहां जावलियाजी और आलमशाह खान मिले। मैंने एक दिन मजाकिया मूड में कहा कि कांतिसागरजी के खासमखासों में जावलियाजी और खान साहब दायें-बायें.... हैं। मेवाड़ी में इसका अर्थ 'अति नजदीक, घनिष्ट' होता है पर जावलियाजी इतने उखड़े कि बाहें चढ़ादीं। मुझे उनका वह गुस्सैल तेवर अब भी याद है। मैंने इसकी शिकायत मुनिजी को की भी तो वे हंस दिये और बोले, ऐसा कुछ नहीं, मैत्री में कुछ भी कहने, सुनने, सहने की छूट तो होती ही है।

यह अच्छा रहा कि हमारी दोस्ती में कोई फर्क नहीं पड़ा। खान तो स्वभाव से अक्खड़ थे ही पर उन्होंने कभी कोई बुरा नहीं लिया। इस बार के मिलने में जब जावलियाजी ने मुस्कान के साथ डॉ. खान की याद दिलाई तो मैं यही समझा कि उन्होंने मुझे उस घटना की ही याद दिलाई है।

बार-बार पाटी पर लिखकर बताने तथा बिगाड़ने की झंझट में हम बहुत सी बातें खुलकर नहीं कर पाये। मेरे मन में और भी प्रेमाचार भरी बातों की उनसे जानकारी लेने की उत्सुकता थी पर कान की बाधा ही बाधक बनी रही। अन्त में मैंने लिखा, लेखन के क्षेत्र में आप मेरे पितामह हैं। वे यह पढ़ मुस्काये और बोले, अभी 90 का हूं, सौ पूरे कर लेने दो।

जन्मगांठ समारोह में पुस्तक लोकार्पण

महाराणा कुम्भा संगीत परिषद में राजेन्द्र सक्सेना का भव्य जन्मगांठ समारोह आयोजित किया गया था। इसमें नगर के कई साहित्यकारों के साथ अन्य लोग उपस्थित थे। इसी समारोह के बीच सक्सेनाजी की एक नव प्रकाशित कृति का लोकार्पण कार्यक्रम रखा गया जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने उनकी कृति की भरपूर प्रशंसा की। केवल डॉ. आलमशाह खान ऐसे कहानीकार थे जिन्होंने उसकी निष्पक्ष समीक्षा की वह सक्सेनाजी के लिए ठकुर सुहाती नहीं थी सो वे बड़े खिन्न हुए।

बाद में चाय पर उन्होंने मुझे कहा, देखिये भानावतजी, किन-किन लोगों ने मेरी पुस्तक पर कैसे अच्छे कमेंट्स कहे पर डॉ. खान को ऐसा क्या हो गया जिन्होंने कोई शालीन टिप्पणी नहीं की। इससे मैं आहत हूं।

मैंने उन्हें कहा कि डॉ. आलमशाह ने कई बातें तो आपके लेखन के लिए बहुत अच्छी कही हैं, शायद आपने ध्यान नहीं दिया। कुछ बातों की और उन्होंने अपना लेखकीय मंतव्य प्रकट किया जिसके लिए हर व्यक्ति स्वतंत्र है। वैसे भी पुस्तक जब पाठकों के हाथों में चली जाती है तो लेखक को कई तरह की अच्छी-बुरी प्रतिक्रियाएं जानने के लिए तैयार रहना चाहिए। मेरी दृष्टि में तो ऐसा कुछ नहीं कहा जिस पर ऐसी नाराजगी हो लेकिन आप उनकी प्रकृति से भी परिचित हैं। अच्छा होता, उन्हें बोलने के लिए नहीं बुलाया जाता। आज के इस आयोजन से लेखक चाहे तो यह सबक ले सकता है कि अपनी जन्मगांठ पर अपनी कृति का लोकार्पण न कराये तो अच्छा। बाद में जब आकाशवाणी केन्द्र में हमारी काव्यगोष्ठी हई तब भी सक्सेनाजी ने इस बात को दोहराई तब मुझे लगा कि उन्हें डॉ. खान का वह कथन बड़े गहरे रूप में चोटिल कर गया है।

स्मृतियों के शिखर (39) : डॉ. महेन्द्र भानावत

असल इतिहास के अनोखे खोजी : डॉ. हुकमसिंह भाटी

डॉ. हुकमसिंहजी भाटी से मेरा परिचय सम्मानजनक स्नेहशील संबंध का है। इनसे पूर्व उनके अग्रज डॉ. नारायणसिंहजी भाटी से मेरा परिचय हो चुका था। वे चूंकि उम्र में और यों भी काफी प्रतिष्ठित लेखक के रूप में जाने जाते थे तब भी उनका मेरे प्रति विशेष स्नेह था।

यद्यपि मेरा और उनका लेखन क्षेत्र जुदा-जुदा था किंतु उन्होंने मुझे सदैव प्रशंसनीय प्रोत्साहन ही दिया बल्कि मेरे द्वारा किये जा रहे राजस्थान के लोकनाट्यों पर अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका 'परंपरा' का एक विशिष्ट अंक ही प्रकाशित कर दिया। बड़ी उम्र और कम उम्र का फासला होते हुए भी उन्होंने मुझे बड़ा बना दिया। इस कारण भी मेरे मन में उनके प्रति सदैव पूज्य भाव ही बना रहा।

तब तक हुकमसिंहजी से मेरा परिचय नहीं था। पहलीबार तब ही हुआ जब वे 1986 में मई माह में उदयपुर आये। यहां के भूपाल नोबल्स संस्थान द्वारा संचालित प्रताप शोध प्रतिष्ठान में निदेशक बनकर। संभवत: जून माह की किसी तिथि को वे भारतीय लोककला मंडल आए और बड़ी शालीन आत्मीयता से रू-ब-रू हुए।

उन्होंने परिचय भी उसी शालीनता से दिया कि मैं अपने आदरजोग अग्रज डॉ. नारायणसिंहजी का भाई हूं और यहां प्रताप शोध प्रतिष्ठान में आया हूं। भाई साहब ने आपका परिचय देते मिलने को कहा और बोले कि वहां भी यहां जैसे ही मित्रों का अपना परिवार है। वैसी ही आत्मीयता, स्नेहचारा, मन रम जायेगा। उनके इस कथन से हम ऐसे बंध गये जैसे वर्षों के साथी हैं और सचमुच में, जब तक वे यहां रहे, पूरे एक दशक तक हमारी मैत्री निरंतर पकाई लिए रही।

प्रताप शोध प्रतिष्ठान से मेरा जुड़ाव पहले से था। भूपाल नोबल्स संस्थान की एक सशक्त इकाई भूपाल नोबल्स कॉलेज के रूप में प्रसिद्धि लिए थी। वहां हिंदी विभाग में प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ और डॉ. विश्वंभर व्यास मेरे अभिन्न साथी थे सो हम लोग यदा-कदा मिल बैठते और फुर्सत लेकर प्रताप शोध प्रतिष्ठान भी हो आते जहां ठाकुर स्वरूपसिंहजी अध्यक्ष थे और वे आये दिन कोई न कोई संगोष्ठी, महत्वपूर्ण आयोजन, जयंती समारोह जैसे कार्यक्रम करते रहते।

इसका लाभ हमें यह मिलता रहा कि कई विद्वानों से हमारी भेंट होती। उनमें इतिहास के, पुरातत्व के, साहित्य के, समाजशास्त्र के सभी धारा-विधाओं के निष्णात विद्वानों तथा साथियों का सान्निध्य प्राप्त होता। डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, प्रो. मथुराप्रसाद अग्रवाल 'पतंग', डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, डॉ. देव कोठारी, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, तेजसिंह 'तरुण' से निरंतर मैत्री- संबंध प्रगाढ़ होते रहे।

इसके अलावा के जो भी विद्वान आते उन्हें भी मैं समय निकालकर प्रताप शोध प्रतिष्ठान ले जाता। डॉ. भाटीजी किसी भी क्षेत्र के विद्वान से भेंटकर बड़े खुश होते और गर्व महसूस करते। कहते भी कि विद्वानों का सान्निध्य और उनकी संगत घर आई गंगा का पावन प्रसाद पाना होता है। उनके अनुभव-जगत का लाभ सहज मिलता रहता है और बहुत सारी खूबियां देखने-जानने का अवसर हाथ लगता है जो हमारे लिए भी अनिवार्य आदर्शरूपेण हो सकती हैं। डॉ. भाटी प्रतिष्ठान की गति-प्रगति का अवलोकन कराते। उनसे आवश्यक दिशा-बोध प्राप्त करते। भावी योजना की जानकारी देते और अपने प्रकाशनों का आदान-प्रदान कर ज्ञान-समृद्ध होते।

मुझे भलीप्रकार याद है, 02 फरवरी 1990 की सुबह अपने अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावतजी को उनसे मिलाने ले गया तो वे बेहद प्रसन्न हुए और डॉ. नारायणसिंहजी भाटी से उनके परिचय की घनिष्टता की कई बातों का आदान-प्रदान करते रहे। उन्होंने भाई साहब को जितना आत्मीय और पारिवारिक सम्मान दिया, मैं चकित रह गया। मेरे बारे में भी उन्होंने भाई साहब को बहुत सारी ऐसी बातें कहीं जिनसे मुझे लगा कि मित्रों को परखने और उन्हें सम्मान देने की कला कोई उनसे सीखे।

घंटे-डेढ़ घंटे की मुलाकात के बाद भाई साहब ने मुझे बताया कि डॉ. हुकमसिंहजी भाटी से उनकी यह पहली भेंट थी जिसकी चर्चा वे लंबे समय तक करते रहे और उन्हें यह बहुत अच्छा लगा कि पूरा भाटी-परिवार ही ज्ञान-संपदा की खदान लिए है। ऐसे परिवार बहुत कम देखने को मिलते हैं जो बड़े ज्ञानी और गुणी होते हुए भी उतने ही विनम्र तथा विनयशील बने रहते हैं। अपनी सम्मति में भाई साहब ने वहां जो टिप्पणी लिखी उसे पढ़कर भाटीजी का मौन-भाव ही नहीं, दृष्टि-भाव भी अति विनम्र होकर उनके प्रति नमित हुआ लगा।

संस्थान की गतिविधियों में भाटीजी के कर्मठ कृतित्व और कार्यशैली के प्रभाव का जो तात्कालिक प्रभाव रहा, उसे भाई साहब ने इस रूप में दर्ज किया-

प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ. हुकमसिंह भाटी निष्ठावान इतिहासज्ञ विद्वान हैं। राजस्थान के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक इतिहास को समग्र समन्वित दृष्टि से प्रस्तुत करने में संस्थान अपने अल्प साधन होते हुए भी पूर्ण जागरूकता एवं कर्मठता के साथ जुड़ा हुआ है। अल्प समय में जो प्रकाशन हुए हैं वे कई अछूते संदर्भों प्रसंगों तथा घटनाओं पर विशेष प्रकाश डालते हैं। प्रकाशनों में इतिहास और साहित्य का अनूठा संगम है। प्रस्तुतिकरण भव्यता और मौलिकता लिए हुए है। मैं संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूं।

- डॉ. नरेन्द्र भानावत

यही नहीं, उदयपुर में राजस्थान साहित्य अकादमी के समारोह में अगरचंदजी नाहटा, मनोहरजी शर्मा, सीतारामजी लालस जैसी हस्तियों से भी भाटीजी के साथ मेरा मिलना हुआ।

डॉ. हुकमसिंहजी के आने से प्रताप शोध प्रतिष्ठान में साहित्य-इतिहास से जुड़े कार्यक्रमों की हलचल मच गई। अनेक विद्वानों का आना-जाना बना रहा।

मुझे भी कई ऐसी विभूतियों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा जिन्हें मैं पत्र-पत्रिकाओं में लगातार पढ़ता रहा और उनसे मिलने की जिज्ञासा भी बनी रही। सन् 1995 में जब राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस का 17वां अधिवेशन उदयपुर में प्रताप शोध प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित किया गया तो अनेक विद्वानों के साथ चंदेरिया के मुनिश्री जिनविजयजी तथा सीतामऊ के महाराजकुमार डॉ. रघुवीरसिंहजी से प्रथम बार भेंट हुई।

उदयपुर में साहित्य अकादमी के अलावा राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान में भी उम्दा आयोजन होते। वहां भी कविराव मोहनसिंह, सौभाग्यसिंह शेखावत, सांवलदान आशिया, कृष्णचंद शास्त्री जैसे विद्वानों से हमारा नैकट्य बना। भारतीय लोककला मंडल में रहकर मैंने भी लोककला-साहित्य-संस्कृति से जुड़े समय-समय पर विविध आयोजन, संगोष्ठियां तथा समारोह आयोजित किये तब भी भाटीजी ने अपनी उपस्थिति देकर हमारा गौरव बढ़ाया। यहीं कोमल कोठारी, जगदीशचंद्र माथुर, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, विजय वर्मा, मंगल सक्सेना, ओंकारश्री, मालती शर्मा से उनकी खास मुलाकात हुई।

अपने प्रतिष्ठान में रहते डॉ. हुकमसिंहजी ने मेवाड़ की चप्पा-चप्पा भूमि को खंगाला और अनेक पट्टों, परवानों, शिलालेखों, विगतों, बहियों, अभिलेखों, वंशावलियों, ख्यातों, हकीकतों का सर्वेक्षण-अध्ययन-पर्यवेक्षण ही नहीं किया अपितु मेवाड़ के ऐतिहासिक पट्टे-परवाने, मेवाड़ जागीरदारां की विगत, मेवाड़ रावल राणाजी की बात, मेवाड़ ठिकानों के अभिलेख, मेवाड़ के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, मेवाड़ के ठिकानों एवं घरानों की पुरालेखीय सामग्री, मेवाड़ जागीरदारां रे गांव पट्टा राह मरजाद री हकीकत, गोगुंदा री ख्यात जैसे ग्रंथों का प्रणयन-प्रकाशन किया।

यही नहीं, इतिहासकार जेम्स टॉड के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर ऐतिहासिक विवेचन लिखा। महाराणा राजसिंह के परगनों तथा पट्टेदारों की विगत पर शोधात्मक अनुशीलन किया तथा महाराणा प्रताप पर पुस्तक लेखन की प्रेरणा प्राप्त की।

मेवाड़ की इस देन को स्वयं डॉ. हुकमसिंहजी ने स्वीकारते हुए राजस्थान के ऐतिहासिक दुर्लभ ग्रंथों का अनुशीलन नामक ग्रंथ की प्रस्तावना में लिखा- 'मैंने मेवाड़ के अनेक ठिकानों की शोध यात्राएं कर वहां के पूर्व के ठिकानेदारों से संपर्क साधा और ठिकाने में संग्रहीत सामग्री का अवलोकन करते हुए उन्हें समझाया कि ये सामग्री अधिक समय तक यहां सुरक्षित नहीं रह सकती और न ही इसका उपयोग हो सकेगा।

-शेष पृष्ठ सात पर

अमृत पुरुष : आचार्य तुलसी

- मुनि सुखलाल -

आदमी के लिए संस्कृत भाषा में मर्त्य शब्द का प्रयोग होता है। मर्त्य का अर्थ है- मरणशील। जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अनिवार्य है। यों देवताओं को अमर्त्य कहा जाता है पर देवताओं का आयुष्य भी सीमित होता है। कालमान में वे चाहे मनुष्य से बहुत लम्बे जी सकते हैं, पर अंतत: वे भी अपना आयुष्य पूर्ण करते हैं पर कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मर कर भी अमर बन जाते हैं। शरीर से वे भले ही हमारे बीच नहीं रहते हैं, पर अपने सुकृत्यों से वे एक ऐसा भावात्मक संवाद बना लेते हैं कि उनकी स्मृति लम्बे समय तक जन-जन के मन में अंकित रहती है।

आचार्य तुलसी भी एक ऐसे अमृत पुरुष हैं। उनके जीवन का अपना एक साधनापक्ष तो है ही, पर विविध आयामों में उन्होंने एक अद्‌भुत लोकप्रियता हासिल की। उनका चेहरा ही इतना तेजोमय था कि लोग घंटों उसे अपलक निहारते रहते थे।

हंगरी की एलिजाबेथ ब्रूनर एक ऐसी ही कलाकार महिला थी भले ही वह भारतीय भाषा को नहीं समझती थी, पर आचार्य तुलसी की मानवीय मुखमुद्रा की भाषा को अवश्य समझती थी। रवीन्द्रनाथ टेगोर के शान्ति-निकेतन के प्राची द्वार पर एलिजाबेथ ने आचार्यश्री को पहलीबार देखा। फिर कलकत्ता में उनका पोर्टेट बनाने के लिए उपस्थित हुई। उसका बनाया हुआ पोर्टेट आज भी आचार्य तुलसी को अमर बनाये हुए है।

देशी-विदेशी हजारों कैमरामैनों की रीलों एवं कैमरों में अनेकानेक मुद्राओं में आचार्य तुलसी जीवित हैं। अमृत वाणी तो उनकी अमरता का एक अक्षत खजाना है। राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की 'लिविंग विद पर्पज' पुस्तक से लेकर मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और न जाने कितने कवियों ने उन्हें अपनी कविताओं में जीवित रख छोड़ा है।

आचार्य तुलसी ने स्वयं भी अपने साहित्य में अपने को चिरस्मरणीय बना लिया है। आगम साहित्य पर किया गया उनका कार्य तो शताब्दियों तक उन्हें जिन्दा रखेगा। आचार्य तुलसी स्वयं कहा करते थे- 'मेरे जीवन का सर्वोत्तम कार्य अगर कोई है तो वह है आगम कार्य।' सचमुच आगम कार्य ने उन्हें अमरता का वरदान दिया है।

उनका चेहरा ही इतना तेजोमय था कि लोग घंटों उसे अपलक निहारते रहते थे। हंगरी की एलिजाबेथ ब्रूनर भारतीय भाषा को नहीं समझती थी, पर आचार्य तुलसी की मानवीय मुखमुद्रा की भाषा को अवश्य समझती थी। उसका बनाया हुआ पोर्टेट आज भी आचार्य तुलसी को अमर बनाये हुए है। आचार्य तुलसी केवल देह का नाम नहीं था। वह एक चिन्मय व्यक्तित्व थे। एक ऐसे प्रज्ञापुरुष थे जो स्वयं पुरुषार्थी थे तथा दूसरों को भी पुरुषार्थी बनने की प्रेरणा देते थे। सचमुच में वे हमारे लिए अमृत पुरुष ही थे।

आचार्य तुलसी को इस बात का अहसास था कि उनके बाद उनकी कार्य-परम्परा का क्या होगा! वे कहते भी कि ऐसा न हो कि भविष्य में लोग हमें भूल जाए। इसीलिए वे व्यक्तित्व निर्माण को सबसे बड़ा कार्य मानते थे। आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा आदि उनके ऐसे हस्ताक्षर हैं जिन्हें कोई भी पहचान सकता है। ऐसे अनेक साधु-साध्वियां एवं कार्यकर्ताओं की एक पूरी टीम उनकी साकार उपस्थिति दर्ज करा रही है।

आचार्य तुलसी केवल देह का नाम नहीं था। वह एक चिन्मय व्यक्तित्व थे। एक ऐसे प्रज्ञापुरुष थे जो स्वयं पुरुषार्थी थे तथा दूसरों को भी पुरुषार्थी बनने की प्रेरणा देते थे। सचमुच में वे हमारे लिए अमृत पुरुष ही थे।

खोज खबर

नन्द चतुर्वेदी और मेरे बाल

नन्द चतुर्वेदी जिन्हें हम सब नंदबाबू ही कहते, से मेरा जुड़ाव सन् 1960 से बना। वे बड़े ही दिलचस्प, हंसने-हंसाने वाले तथा हर दिल अजीज थे। कोई भी मिलता, उसके साथ रंग की दानी में व्यंग्य का मसाला दिये बिना नहीं रहते। मेरे साथ का उनका हर समय मजेदार समय ही व्यतीत हुआ। इसमें कभी भी किसी भी बड़ी हस्ती से भेंट करते समय भी छोटे किंवा बौने बनने का भाव नहीं बना। वे राजनीति के किनारे-किनारे भी अपना स्पर्श दिये दखल बनाये रखने की चेष्टा में रहे। भारतीय लोककला मंडल के समारोह-संगोष्ठी में अज्ञेय, प्रभाकर माचवे, जैनेन्द्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, कपिला वात्स्यायन, जगदीशचन्द्र माथुर, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, काका कालेलकर, वेरियर एलविन, दिनेश नंदिनी डालमिया जैसे और भी कई नामों के साथ नन्दजी को अपनी स्वाभाविक चुहलबाजी करते मैंने देखा है।

मेरा जब-जब भी नंदबाबू से मिलना हुआ, वे बेमजा नहीं मिले। उनके साथ जो मजा लेने का स्वभाव नहीं रख पाया, वह आहत ही हुआ। उन दिनों जब चेटक सर्कल पर मेरा मंगल मुद्रण नाम से छापाखाना था, नन्दजी पास की किशन पान वाले की दुकान पर संध्या को सिगरेट पीने के बहाने मिलते। प्रकाश आतुर, डॉ. भगवतीलाल व्यास, किशन दाधीच भी कभी शरीक हो जाते। एक बार सिगरेट का धुंआ छोड़ते-छोड़ते नन्दबाबू ने मुझे छेड़ दिया। बोले, महेन्द्र तुम बड़े डरपोक हो। मैं बोला, आपने मुझे कहां डरते देखा। वे बोले, यह देखो, हम सिगरेट का कस खींच रहे हैं और आप सिकुड़े-सिकुड़े डरते-डरते से हमारी ओर देख रहे हैं।

मैंने कहा, मुझ से आप क्या चाहते हैं? वे बोले, हमारी तरह जीओ तो जानें, कुछ बहादुरी रखो। मैं तपाक से बोला, इसमें क्या बहादुरी और क्या डर! मैं यहां किसी से नहीं डरता पर यदि आप मेरी बहादुरी का यही पैमाना समझते हैं तो 'लीजिये' कहकर मैंने एक सिगरेट ली, जलाई, कस खींचा और सबके देखते-देखते धुंआ ऊपर छोड़ दिया।

दूसरा वाकया इससे भी बड़ा, मजेदार रहा। मैं बाल बढ़ाये हुए रखता था। ऐसे ही मंगल मुद्रण में मित्रों के बीच बैठे उन्होंने मेरे सिर पर अपनी उंगलियां घुमाते छछूंदरी छोड़ी- बाल बढ़ाने से आप इस भ्रम में न रहें कि ज्यों-ज्यों बाल बढ़ते हैं त्यों-त्यों अन्य चीजें भी बढ़ती जाती हैं। उनका यह कहना हुआ कि जोरदार ठहाका लगा। मैं बड़ा अच्छा जवाब दे सकता था पर अपनी खोल में रहा। छोटे मुंह बड़ी बात करना ठीक नहीं समझा किन्तु उनका यह कथन मुझे पचा भी नहीं।

मैं अवसर की टोह में था। उन्हीं दिनों सूचना केन्द्र में एक काव्यगोष्ठी हुई। उसमें मैंने 'मैंने बाल बढ़ाये' शीर्षक से एक कविता पढ़ी जिसे बाद में 1980 में प्रकाशित अपने कविता-संग्रह 'कोई-कोई औरत' में सम्मिलित की। आप भी उसका जायका लीजिये-

मैंने बाल बढ़ाये
तो कई मित्रों की खाल खिंच गई
एक विशिष्ट किस्म का
मार्का बन गया हूं मैं
अपने बाल को लेकर।
भाई लोग
तरह-तरह से जल रहे हैं
वे बालों को भी एक
जलवा मान रहे हैं
फुसफुसाने लग गये हैं
कहते हैं
कि मैंने यह एक भ्रम पाल लिया है
कि बाल बढ़ाने से हर चीज बढ़ जाती है।
मुझे कोई स्पष्टीकरण
नहीं देना है
मैं जानता हूं
बाल बढ़ाना और लाड़लड़ाना
सब कोई चाहते हैं
मगर उनके चाहने से
क्या होता है
लोग चाहें जब न!
बाल बढ़े तब न!
उन्हें क्या मालूम बिचारों को
मेरे ये बाल कितनों के रसिया बालम हैं!
न जाने
कितनी छातियों पर स्वप्न बन सोते हैं!
कितना पघलाया पीर भरा है इनमें!
कितने नावक के तीर हैं ये!
कितने घाव दिये इन्होंने!
कितनी नजराई आंखों के आश्रय हैं ये!
कितना भंवर हैं
जिन्होंने बेंध दिये हैं चाहे-अनचाहे
फफकते फूलों को
कसकते कोंपल को
उन्हें क्या मालूम
मेरे बालों की जड़ कहां-कहां है?
कितने हियों की आंखें हैं ये बाल!
इनके भांपन से
न जाने कितनी पांखें
जिन्दी बींधी नींदी उनींदी हैं
उन्हें क्या मालूम बिचारों को
बाल मैंने बढ़ाये हैं
खाल उनकी खिंच गई है।

- म.भा.

सांझी के बहाने भाटियाजी से महनीय जुड़ाव

वृंदावन के प्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार मोहनस्वरूप भाटिया से मेरा लेखन परिचय ही रहा। यह परिचय भी उनके द्वारा धर्मयुग में लिखे 'ब्रज की सांझी' विषयक लेख से हुआ। मेरा सांझी विषयक एक लेख राजस्थान की कुमारिकाओं पर 'गुड़ गुड़ गुड़ल्यो गुड़ तो जाय' शीर्षक से धर्मयुग में 25 सितम्बर 1960 को छपा था। यह पर छपा मेरा प्रथम आलेख था जो सचित्र था। इसके बाद भाटियाजी का ब्रज की सांझी पर लेख छपा।

इस लेख से मुझे लगा कि सांझी का व्यापक क्षेत्र और प्रभाव है अत: इस पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। मैं इस विषयक विशद जानकारी में लग गया। इससे मुझे प्रतीत हुआ कि इसका मूल राजस्थान है। इस सम्बंधी कई गीत, कथा, मिथक मिले और फिर यह भी पता चला कि राजस्थान से बाहर इसका विस्तार मालवा, ब्रज, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र और सुदूर नेपाल तक है। फल यह हुआ कि मैंने एक पुस्तक ही संझ्या पर तैयार कर ली जिसका प्रकाशन भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर से किया गया जहां मैं शोध विभाग का अधिकारी था। यह घटना सन् 1977 की है।

भाटियाजी से मेरा पत्राचार होता रहा। मुझे हर समय यही लगता रहा कि मैं और वे जो कुछ कर रहे हैं वह समानधर्मी कार्य है। वे पत्रकार की हैसियत में रहे, मैं भी रहा। वे ब्रज की लोककला, संस्कृति और जीवनधर्मिता को केन्द्रित किये पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे, इधर मैं भी राजस्थान की लोककला, लोकसंस्कृति तथा लोकजीवनपरक वैविध्य रूपा लेखन करता रहा। कुछ दैनिकों में कॉलम भी लिखता रहा। गाये-बगाये विद्वानों के साक्षात्कार, राजनेताओं के टिप्पण आदि भी लेता रहा। ये सारे कार्य भाटियाजी भी बखूबी करते रहे और प्रतिष्ठा-दर-प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहे। जोग-संजोग देखिये कि जब भाटियाजी से मिलना हुआ तब भी प्रसंग सांझी का ही बना। वृन्दावन में ही लोकमनीषी रामनारायणजी अग्रवाल ने अपने ब्रज कलाकेन्द्र द्वारा ब्रज लोककला संगोष्ठी का आयोजन किया था। केन्द्रीय विषय था- सांझीकला के उत्स। 23 से 25 फरवरी 2001 को त्रि-दिवसीय इस संगोष्ठी के प्रथम सत्र की मैंने अध्यक्षता भी की थी। मैंने लोक चितरावण सांझी विषयक आलेख पढ़ा। इस अवसर पर मेरी सद्य प्रकाशित पुस्तक पाबूजी की पड़ का लोकार्पण भी रामनारायणजी द्वारा हुआ।

संगोष्ठी के बहाने डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त, डॉ. कपिल तिवारी, डॉ. मालती शर्मा, गोपालप्रसाद मुद्‌गल आदि विद्वानों से घनिष्ट मेलमिलाप और विचार विमर्श हो गया। भाटियाजी ने भी बड़ी उदारता एवं आत्मीयता का परिचय दिया। वर्षों से मिलने की कामना पूरी हुई। उनकी उपलब्धियों की जानकारी से वही गौरव हुआ जो एक आत्मीयजन की उपलब्धियों पर होता है। भाटियाजी ने ब्रज की सांझीकला पर बड़ा गंभीर और गवेषणापूर्व आलेख पढ़कर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया। भाटियाजी ने सांझी को आदिशक्ति देवी की प्रतीक पार्वती के लोकगृहीत रूप गौरा तथा एक ऐसी नायिका बताई जो पितृ पक्ष में अपने भाई के साथ ससुराल से पीहर आती है।

मैंने अपने आलेख में स्पष्ट किया कि लोकसंस्कृति की कोई भी धारा-प्रधारा याकि विधा विविधा हो, उसका अध्ययन बड़ी निष्ठा, लगन और ईमानदारी से करना होगा। अध्ययन करने वाले महानुभाव को पूर्वाग्रह से मुक्त हो उसकी अन्त:चेतना की तह में जाना होगा। अपने निजी हित, उपलब्धि या नामवरी का मोह छोड़ना होगा। तथ्यों की तोड़मरोड़ से बचना होगा तथा सब तरह का अध्ययन कर आत्म-स्वीकृति से कोई बात कही जायगी तो वह सत्य उद्‌घाटित होगी। उसे प्रमाणित करने के लिए आंखें फाड़ने या बार-बार मुंह को बिचोड़ने की आवश्यकता नहीं है। सभी विद्वान स्वीकारते हैं कि लोकलाओं का आंचलिक परिवेश ही उनमें रंग भरता है। सच भी है, लोक की सम्पदा आंचलिक बोध से ही अधिक अनुप्राणित होती है। उसका अध्ययन लोकतत्वों की आधारशिला लिये होना चाहिये। इसमें स्थानीय रंग-बोध, आंचलिक परिवेश, रंजन-अनुरंजन, हंसी-दिल्लगी, लोकजीवन के सरोकार, सांस्कृति उत्स, जीवनेच्छाओं तथा निज भाषा-बोली के सहज स्फुटन की अन्त:श्चेतनाओं के इन्द्रधनुषी सहकारों से जो आयाम उद्‌घाटित होते हैं वे ही लोकतत्व को रूपायित करते हैं। भाटियाजी ब्रज लोक के गहन अध्येता, गवेषणामूलक चिन्तक और मूर्धन्य मनीषी हैं। उनका अध्ययन पाश्चात्य परिवेश का मुखौटा नहीं होकर भारतीय मन-मनसा, उसकी सौरभपूर्ण माटी, उसके सौंदर्य तथा तत्वबोध को रेखांकित कर विस्तारव्यापी फलक देने का है। वे सर्वप्रकारेण अभिनंदनीय हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 नवम्बर 2017

सम्पादकीय

शोध के मार्गदर्शक

गत दशकों में शिक्षा का जिस तेजी से चीर बढ़ा वह अकल्पनीय ही है। जगह-जगह विश्वविद्यालयों की जो तादाद बढ़ी, लगा जैसे मकोड़ों की पोट ही खुल गई है। जाहिर है, शोध करने वाले छात्रों की संख्या भी बढ़ती गई और उतने ही गाइड जैसे तैनात हुए। तब स्वाभाविक था शोध की गुणवत्ता पर इसका असर पड़ा और बेहिसाब उपाधियों से झोले भरते नजर आये।

ऐसी बेहिसाब मंहगाई की तरह बढ़ते ग्राफ को कैसे बढ़ने दिया जाता तब नकेल लगाने के रास्ते ढूंढ़े गये। यह भी हुआ, ज्यों-ज्यों रास्ते ढूंढ़ते गये, ऊंट की गर्दन बढ़ती गई। शिक्षा में एक अजूबा खिलखिलाता नजर आया पर जो हो गया, हो गया।

किसी उफान को रोकने के लिए उसका रास्ता बदल देना, नया कुछ कर देना स्थायी हल नहीं है। जो करे सो भरे कहावत कभी कई अच्छे संदर्भ लिये बनी होगी पर अब इसका अर्थ जो कर रहा है वही भर रहा है, होने लग गया है। सो रामई की चिड़िया, रामई का खेत, खाओ री चिड़िया भर-भर पेट।

पिछले 70 वर्षों में जो देश के चलाऊ बने हैं वे उस सारे गलियारे से निकलकर शीर्ष तक पहुंचे हैं। वे आत्म भोगी हैं। अन्तर भोगी हैं और फाईल तैयार करते, कागज को पंच करते, फाइल में नत्थी करते, उस फाईल को साहब की टेबल पर रखते, साहब का नोटिंग पढ़ते, पुनः फाईल पाकर तदनुकूल कार्यवाही करते-करते अन्त में बाबू से बड़े साहब तक का सफर, ठठारा साइकिल से करते हवाई हिल तक पहुंचे हैं। उस सफर का वायरल सबको लगा है।

शोध का स्तरीय पैमाना 'गाईड' से अधिक जुड़ा हुआ है। जैसे वकील अपने अनुभव स्तर की उच्चता से जज बनते हैं क्या वे सम्माननीय लेखक सम्माननीय गाईड नहीं बन सकते जिनको पढ़े बिना या जिनसे मार्गदर्शित हुए बिना कोई शोध पूरा नहीं होती। गंभीरतापूर्वक शिक्षाशास्त्री विचार करें।

सलूम्बर में सलिला सम्मान

सलूम्बर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन में 'हमारे समय की श्रेष्ठ बालकथाएं' का लोकार्पण हुआ।

बालसाहित्य प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार मोहम्मद साजिद खान, शाहजहांपुर, द्वितीय पुरस्कार रजनीकान्त शुक्ल, गाजियाबाद, तृतीय पुरस्कार डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल तथा मेवाड़ गौरव अलंकरण माधव दरक, केलवाड़ा को प्रदान किया गया। सम्मान की कड़ी में विशिष्ट साहित्यकार सम्मान डॉ. रमाकांत शर्मा और डॉ. शील कौशिक, साहित्य रत्न सम्मान जितेन्द्र 'निर्मोही', सुनील गज्जाणी, लालदास 'पर्जन्य' एवं प्रमिला शरद को दिया। साहित्यकारों ने सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी को पुस्तकें भेंट की। राजकुमार जैन 'राजन' ने कहा कि जिन घरों में साहित्य नहीं वहां संस्कार नहीं।

सम्मेलन में पांच राज्यों से 50-60 साहित्यकारों ने शिरकत की। बालकथा को लेकर नये सृजन की निजता भी इस कार्यक्रम के संभागियों का आर्कषण रहा। ओंकारलाल शास्त्री स्मृति पुरस्कार के लिये 70 प्रतिभगियो की 130 रचनाएं आयी। उनके तीन स्तर पर आकलन के बाद प्रथम, द्वितीय तृतीय और 10 श्रेष्ठ पुरस्कार विजेताओं की सूचना प्रसारित की गई।

डॉ. विमला भंडारी सम्मानित

मथुरा में आयोजित सम्मान समारोह में डॉ विमला भंडारी को 'कारगिल की घाटी' पुस्तक पर पं. हरप्रसाद पाठक स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया।

आंकड़ों के मक्कड़जाल में फंसती भारतीय अर्थव्यवस्था

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-

भारतीय अर्थव्यवस्था एक संक्रमण काल से गुजर रही है। साल भर पहले नजर आने वाली उभरती भारतीय अर्थव्यवस्था पर आज अनेक प्रश्न चिन्ह खड़े हो रहे हैं। सरकार को अपनी ही पार्टी के नेताओं तथा संघ परिवार से चुनौती मिलने लगी है। इसके कई दृश्य कारण हैं।

साढ़े तीन वर्ष पहले जब वर्तमान सरकार ने कार्यभार संभाला तब सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 7.9 प्रतिशत थी जो आज घटकर 5.7 प्रतिशत रह गई है। अटलबिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में वित्तमंत्री रहे यशवन्त सिन्हा ने भी इण्डियन एक्सप्रेस में अपनी पीड़ा एक आलेख के माध्यम से सरकार को प्रेषित की है। उन्होंने लिखा कि आज देश में निजी विनियोग घट रहा है। बेरोजगारी बढ़ रही है। औद्योगिक उत्पादन गिरावट की तरफ है। कृषि क्षेत्र मंदी की ओर है, बैंकों में एन.पी.ए. तीव्र गति के बढ़ रहा है। लोगों की जेबों में तरलता नहीं है आदि।

परिणामस्वरूप सरकार द्वारा लिये जा रहे आर्थिक निर्णयों पर लोगों का विश्वास कम होने लगा है। यदि आर्थिक विश्लेषकों की मानें तो इस गिरावट का कारण नोटबंदी का निर्णय तथा बिना तैयारी के जी.एस.टी. का लागू करना है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसको स्वीकार नहीं करते हैं और अपने आर्थिक निर्णयों को बड़ी निडरता से सही ठहराते हुये दीर्घकाल में बेहतर सकारात्मक प्रभाव की अनुशंसा करते हैं। ऐसा मानने के पीछे हाल ही में जारी किये गये तिमाही के आर्थिक आंकड़ें हैं। अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में सकारात्मक वृद्धि के संकेत मिल रहे हैं। मसलन कारों की बिक्री में 12 प्रतिशत, दुपहिया वाहनों में 14 प्रतिशत, वाणिज्यिक वाहनों में 23 प्रतिशत वायु परिवहन में यात्रा भार तथा टेलीफोन उपभोक्ताओं की वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है।

यह सही है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में सकारात्मक वृद्धि के संकेत मिल रहे हैं किन्तु अधिकांश क्षेत्रों में स्थिति दयनीय है। खनन क्षेत्र में ऋणात्मक वृद्धि -0.66 प्रतिशत दर्ज की गई है। निर्माण क्षेत्र में 1.17 प्रतिशत, कृषि, वन तथा मछली पालन व्यवसाय में 2.34 प्रतिशत तथा कन्स्ट्रेक्शन क्षेत्र में 2 प्रतिशत कमी आयी है। इससे भी बड़ा बुरा हाल बेरोजगारी का हुआ है। सीएमआइई उपभोक्ता कुटुम्ब सर्वेक्षण के अनुसार संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में जनवरी-अप्रेल 2017 के मध्य 1.5 मीलियन नौकरिया समाप्त हो गयी हैं। (बिजनेस स्टैण्डर्ड 10 जुलाई 2017)।

सरकार अच्छी नियत के साथ आर्थिक सुधार लागू कर रही है ताकि भारत विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आ सके किन्तु उसके यथेष्ट परिणाम नहीं मिल रहे हैं। मेरी दृष्टि से इसका कारण सरकारी व्यवस्था में नौकरशाही एवं उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार प्रमुख है। नोटबंदी की मुहिम के फैल होने के पीछे भ्रष्ट बैंक अधिकारियों का हाथ होना माना जा रहा है जिन्होंने लोगों के काले धन को सफेद धन के बदलने में अहम भूमिका निभायी। जी.एस.टी. लागू होने से फिर इंस्पेक्टर राज पुनर्जीवित हो रहा है। जीएसटी लागू होने में पहले व्यापारियों को अपना काला धन ठिकाने लगाने के लिए दो-दो अधिकारियों, (उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर) से सामंजस्य बिठाना पड़ता था किन्तु अब तो केवल एक अधिकारी को ही सन्तुष्ट करना पड़ता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार लघु एवं मझले उद्योगों को समाप्त कर बड़े-बड़े कॉरपोरेट को लाभ पहुंचाना चाहती है। भ्रष्ट नौकरशाही के माध्यम से एक ईमानदार सरकारी व्यवस्था स्थापित नहीं की जा सकती। बहुसंख्यक व्यक्तियों को दर्द देकर सरकार रातों-रात भारत को विकसित देशों की पंक्ति में खड़ा नहीं कर सकती।

जीएसटी लागू होने से छोटे व्यापारी काफी हद तक प्रभावित हुये हैं। छोटे व्यापारी आज असमंजस की स्थिति में हैं। प्रतिदिन जीएसटी के लिए एक नया नोटिफिकेशन सरकार की तरफ से निर्मित किया जा रहा है। फलस्वरूप नियमों की अनुपालना भी कठिन हो गई है। 1.5 करोड़ के कम टर्नओवर वाले व्यापारियों को हर तीन महिनों में तथा इससे ज्यादा टर्नऑवर वालों को प्रति माह क्रय-विक्रय के आंकड़े, ई-वे बिल की ऑनलाइन प्रविष्ठि तथा इनपुट क्रेडिट आदि में व्यापारी इतना उलझ गया है कि वह अपने व्यापार पर ध्यान नहीं दे पा रहा है।

इन व्यापारियों की तरलता एवं लाभदायकता में भारी गिरावट नज़र आ रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि बैंक भी इन छोटे व्यापारियों को ऋण देने में असमर्थता प्रकट कर रहे हैं। बैंक भी तभी ऋण देता है जब अर्थव्यवस्था में गति होती है। आज बैंक भी आशंकित है कि उनके द्वारा दिये गये ऋणों की वसूली समय पर हो पायेगी या नहीं। यदि हम सरकारी बैंकों को छोड़ दे तो निजी बैंक तो छोटे व्यापारियों को ऋण देना पसन्द भी नहीं करते। ये बैंक केवल उच्च व्यावसायिक घरानों को ही ऋण देना पसन्द करते हैं। इस तरह छोटे व्यापारियों के ऋण के स्त्रोत पूरी तरह समाप्त होते जा रहे हैं। इसका प्रभाव यह हुआ कि आज बाजार में नकदी का अभाव है और आर्थिक प्रगति नजर नहीं आ रही है।

अब प्रश्न यह उठता है कि सरकार को इन वर्तमान विषम आर्थिक परिस्थितियों में क्या करना चाहिये। इस संबंध में मेरे सुझाव इस प्रकार हैं-

नोटबंदी में नोटों को बदलाने के लिए छत्तीसगढ़ के बस्तर इलाकों में लोगों को 20 से 25 किलोमीटर तक जाना पड़ा फलस्वरूप समाज के नीचे तबके के व्यक्तियों को बहुत कष्ट हुआ और नोट बदलने में 80-90 व्यक्तियों की मृत्यु तक हो गयी।

मेरी दृष्टि में सर्वप्रथम सरकार को जनता से माफी मांगनी चाहिये कि हम नोटबंदी में फैल हो गए और आगे ऐसे निर्णय नहीं लेंगे जिससे आम आदमी को कष्ट हो। इससे लोगों का सरकार से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित होगा और सरकार के प्रति तथा भारतीय मुद्रा पर जनता का विश्वास बढ़ेगा। इससे लोग नकद का सोने में निवेश कम करेंगे और उत्पादक क्रियाओं में विनियोग करेंगे।

जीएसटी अनुपालना को अत्यन्त सरल बनाना होगा तथा सरकार को व्यापारियों के लिए डीजिटल प्रोत्साहन योजना लानी होनी ताकि व्यापारी डीजिटल आधारित व्यापार बढ़ा सकें। सरकार को छोटे उद्योगों को समाप्त कर बड़े उद्योगों को विकसित होने का कदापि मौका नहीं देना चाहिये।

निन्दक नियरे राखियें कहावत के अनुसार सरकार को विश्वास रखना चाहिये। अरुण शौरि, यशवन्त सिन्हा तथा संघ परिवार द्वारा उठाये गये मुद्दों पर सरकार को रक्षात्मक नीति अपनाने की बजाय उन्हें गम्भीरता से लेना चाहिये। यही एक सुदृढ़ एवं अच्छे लोकतंत्र भी निशानी है। आलोचकों को दबाने की बजाय उन्हें अभिव्यक्ति का पूरा अवसर देना चाहिए।

सरकार को सरकारी व्यवस्था के आमूलचूल नीतिगत परिवर्तन करते हुये नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार पर सख्ती करनी चाहिये। लोकपाल विधेयक पर विचार करना चाहिए।

सामूहिक विचार विमर्श के माध्यम से आर्थिक निर्णय लेने की परम्परा मजबूत करनी होगी। समय रहते आर्थिक निर्णयों की दिशा बदलनी होगी अन्यथा जनता आने वाले चुनाव में दिशा परिवर्तन के बारे में सोचने को मजबूर होगी।

नाटक प्रतियोगिता आयोजित

तारा संस्थान, उदयपुर द्वारा शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल में बच्चों के लिए नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बच्चों ने प्रतियोगिताओं में उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर बच्चों ने भ्रष्टाचार एवं घुसखोरी, मां का उपहार, ईमानदार बालक, दहेज प्रथा तथा हवा, पानी, बिजली की परेशानी व पर्यावरण संरक्षक विषयक नाटकों पर आकर्षक प्रस्तुतियां दी। प्रतियोगिता में के.जी. प्रथम कक्षा के नक्ष को प्रथम, हा.के.जी. की माधुरी को द्वितीय, सातवी के विरल को तृतीय तथा पांचवी के प्राणद को चतुर्थ पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में तारा संस्थान की संस्थापक एवं अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल, कार्यकारी अधिकारी दीपेश मित्तल, स्कूल प्राचार्य श्रीमती सोनाली सोलंकी, श्रीमती संगीता देवड़ा संस्था, स्कूल स्टाफ एवं बच्चे उपस्थित थे।

प्रेम के पचासों प्रकार हजारों सवाल

डॉ. शरद पगारे ऐतिहासिक प्रेमकथाओं के बड़े खोजी, कुशल तथा स्थापित कथाकार हैं। उनकी दृष्टि में प्रेमकथाएं कई अर्थों में इतिहास को जीवित रखने का सबसे सशक्त माध्यम हैं। इनकी खोज करने के लिए ऐतिहासिक ज्ञान के साथ ही एक सुलझे हुए समाजशास्त्री की लगन भी जरूरी है। भारतीय पुस्तक परिषद्, नई दिल्ली से प्रकाशित उनकी 'भारत की श्रेष्ठ ऐतिहासिक प्रेमकथाएं' पुस्तक इसका उल्लेखनीय उदाहरण है।

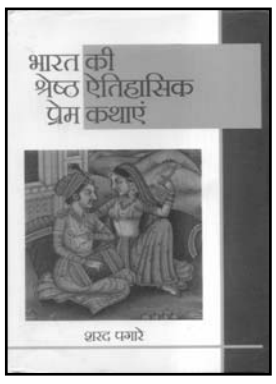

इसमें उन्होंने चौदह प्रेम कथाओं पर लिखा है। हर कथा का प्रारंभ उन्होंने उस कथा से संबंधित प्रेम की महिमा से किया है। उदाहरणार्थ - इसमे उन्होंने विश्व की प्रथम ऐतिहासिक प्रणय-गाथा की खोज तो की ही है, विश्व की प्रथम बंदीग्रह की प्रणय-गाथा को भी प्रस्तुत किया है। वह उदयन की प्रणय-कथा से मस्तानी बाजीराव पेशवा तक की प्रेमकथाओं के बीच इतिहास, साहित्य, कला और लोकगाथाओं को बहुमूल्य खजाने को खंगाले हुए हैं। वे प्रचलित इतिहास के दायरे को तोड़ते हुए नई खोजों में यकीन करते हैं।

ऐतिहासिक संदर्भों के सटीक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत ये प्रेमकथाएं हर पीढ़ी के लिए मनोरंजन के साथ ही जानकारियों का खजाना भी लेकर आई हैं।

इस पुस्तक की भाषा, प्रस्तुति और प्रवाह ऐसा है कि पाठक इसमें डूबकर प्रेम में सरोबार हो जाता है। प्रेम में रुचि रखने वाले हर पीढ़ी के पाठकों के लिए यह पुस्तक एक ऐसा बेहतरीन उपहार है जिसे भारतीय समाज में किसी भी अवसर पर एक-दूसरे को भेंट किया जा सकता है।

प्रेम चिरन्तन सत्य है। कोई भी प्राणी उससे अछूता नहीं रह पाया है। प्रेम-चर्चा में रस है, रहस्य है, रुमान और रोमांच है। वह अद्वितीय है। रस ले-लेकर लोग प्राय: प्रणय व्यापार की चर्चा करते हैं। उस पर बहस करते हैं, सुनते और सुनाते हैं। साहित्य ; लोकजीवन से जुड़ा लोकसाहित्य, कला, नृत्य सभी इसकी अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। प्रेम कथाएं अपनेआप में तीखा आकर्षण रखती हैं, क्योंकि प्यार का दंश सभी को झेलना पड़ता है। चाहे वह राजपरिवार, उच्च एवं अमीर घराने का सदस्य हो या रंक। वह न धर्म देखता है, न जाति। न ऊंच, न नीच। न ही आयु का बन्धन उसे बांध पाता है। वह सार्वजनीन, सर्वयुगीन, शाश्वत सत्य का परिचायक है।

-विश्व की पहली ऐतिहासिक प्रणय-गाथा, पृष्ठ -9

प्रेम कर बैठने या प्रेम हो जाने का कोई निश्चित रासायनिक गुणसूत्र नहीं है। उसका आविष्कार भी नहीं हुआ है। प्रेम का कोई वैज्ञानिक आधार भी नहीं है। किसी के साथ जिन्दगी गुजार देते हैं परन्तु मन के तार नहीं मिलते। लगाव जरूरी हो जाता है, कभी पल दो पल का साथ प्रेम में बदल जाता है क्योंकि क्षण मात्र में दिलों के तार जुड़ जाते हैं। कभी-कभी लगाव को भी प्रेम में परिवर्तित होते पाया गया है। प्रेम ऐसी अनुभूति है, जो न चाहते हुए भी मन-मस्तिष्क को अपने पाश में गहरे तक जकड़ लेती है। प्रेम न समय देखता है, न स्थान। न शत्रुता न मित्रता।

प्रेम विपरीत परिस्थितियों और परिवेश के बन्धनों को भी नहीं मानता। शत्रुओं के परिजनों के साथ भी पनप सकता है। आयु, वर्ग, जाति उसके लिए कोई मायने नहीं रखते। वह प्रणय व्यापार के अंतिम परिणाम की भी चिन्ता नहीं करता। वह दुखद और त्रासद भी हो सकता है। इसकी भी उसे परवाह नहीं। उसका चरित्र और चाल सबसे निराले होते हैं। प्रेम की मादकता, उसकी रूमानियत और उसका नशा प्रेमियों को बहका देते हैं। भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता प्रेमियों को। कट्टर शत्रुओं के परिजन भी आपस में प्यार कर बैठते हैं। इसीलिए कहते हैं कि प्यार अंधा होता है। कोई लक्ष्मण रेखा उसे बांध नहीं पाती।

-विश्व की पहली बंदीगृह की प्रणय-व्यथा, पृष्ठ-52

प्रेम नेत्रहीन, तर्कहीन होता है। न जाति-पांति देखता है, न ही धर्म, रूप, रंग, आयु न वर्ग। प्रेमी दिमाग की अपेक्षा दिल से अधिक प्रेरित-प्रभावित होते हैं।

-और अकबर ने प्रवीणराय का छोड़ दिया, पृष्ठ-121

डॉ. पगारे की यह विशेषता है कि वे जिस काल की प्रेमकथा का चित्रण करते हैं उस काल के चरित्र-नायक के अनुकूल भाषा, परिवेश, वातावरण और स्थिति का ऐसा वर्णन करते हैं जैसे हमें उस घटनाक्रम से आंखों देखा स्पर्श करा रहे हैं। औरंगजेब की प्रेमिका शीर्षक कथा का प्रारंभ देखिये-

सन् 1623 की ग्रीष्म ऋतु। आगरा का लाल किला।

बाअदब बामुलाहिजा होशियार, दस्त बस्ता नजर ए रूबरू शहंशाह-ए-हिन्दोस्तान आलाहजरत शाहबुद्दीन मुहम्मद साहिब-ए-किरां-ए-सानी जहांपनाह साहिब-ए-आलम हुजूर ए वाला शाहेजहां जिल्ले इलाही जलवा अफरोज हो रहे हैं ऐ.... होशियार-खबरदा....।

दीवान-ए-खास में शहजादा औरंगजेब, वजीर-ए-आला, सादुल्ला खान, अमीर-उल-उमरा शाइस्ता खान थे। उनके पीछे खास-खास अमीर, उमरा और मनसबदार कतारबद्ध अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे मरमर ध्वनि में बतिया रहे थे। चोबदार की कड़क ललकार सुनते ही सामने हाथ बांध, सिर नीचा किये खड़े हो गये। दरबार में शांति पसर गई।

शाही हरम और दीवान-ए-खास को जोड़ने वाले गलियारे में नंगी तलवारें लिए ख्वाजा सरा पहरे पर मुस्तैद थे। लाल कालीन मेहराबदार गलियारे में बिछा रहा था। कानों में पन्ने के बुंदे। अंगुलियों में हीरे जड़ी अंगूठियां, सीने पर झूलता सतलड़ा कंठ हार, पेंचदार पगड़ी में जड़ा कोहिनूर हीरा। उसमें लगी कलगी से लिपटी मोतियों की तीन लड़ियां। सोने-चांदी के तारों से कसीदाकारी और मोतियों टंका अंगरखा, चूड़ीदार पायजामा, जवाहरात जड़ी मखमली जूतियां, कमर में लटक रही तलवार तथा हाथ में कटार। बाईं ओर थी चहेती बेटी बेहद हसीन शहजादी जहांआरा।

उसकी बगल में थी असाधारण खूबसूरत शहादी रोशनआरा। दाईं ओर हर दिल अजीज, वली अहद शहजादा दाराशिकोह। दीवान-ए-खास में पहुंचते ही बादशाह मयूर सिंहासन तख्त-ए-ताऊस पर सगर्व जा बैठा। बगल की पर्दादार बालकनी में दोनों शहजादियां बैठीं। सम्राट के तख्त के पास रखी कुर्सी पर दाराशिकोह आसीन हुआ।

मां ! मेरी मां ! सबकी मां ! सर्वत्र एक जैसी

मां धरती पर सबसे बड़ा उपहार है। सृष्टि का सबसे बड़ा सौंदर्य है। कई विशेषणों से विद्वानों, मीमांसकों, संतों, महर्षियों ने मां को विविध रूपों में चित्रित किया है। अखूट विशेषणों के बावजूद मां की व्याख्या, विश्लेषण, विवेचन अधूरा है। मां है तो समग्र सृष्टि है, जीवन है, पर्यावरण है, पांडित्य और पौरूष का प्रत्याख्यान है।

बींजराज रांका द्वारा 536 पृष्ठों में 155 रचनाओं द्वारा इस पुस्तक को विविध वर्गों के लेखकों के आलेखों से संवार कर अपने यशुजी इंडिया ऑटोमेशन, 34-ए-मेटकाल्फ स्ट्रीट, कोलकाता-700013 से प्रकाशित किया है। पुस्तक की यह विशेषता है कि हर पन्ने पर मां ही मां का गुण गौरव गर्वित है। इसी भावोद्रेक से रांकाजी ने इसे प्रत्येक घर की शोभा बताया है। अपनी मंगल कामना में जोधपुर महाराजा गजसिंह ने यह ठीक ही लिखा- यह सृष्टि बिना मां के नहीं सोची जा सकती परन्तु मेरे लिये मां को ये पंक्तियां इस तरह अभिव्यक्त करती हैं-

इस तरह मेरे गुनाहों को वो देती है।
मां बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है।।

पुस्तक के फ्लैप पर लिखा मां के समग्र अस्तित्व और उद्बोधन को व्यक्त करता यह कथन सबकुछ सटीक रूप में कह देता है- ''मां प्राण है, शक्ति है, ऊर्जा, प्रेम, करूणा और ममता का पर्याय है। वह केवल जन्मदात्री ही नहीं, जीवन निर्मात्री भी है। उसी ने अपने हाथों से इस दुनिया का ताना-बाना बुना है। सभ्यता के विकास क्रम में आदिमकाल से लेकर आधुनिककाल तक इन्सानों के आकार-प्रकार में, रहन-सहन में, सोच-विचार, मस्तिष्क में लगातार बदलाव हुए लेकिन मातृत्व भाव में बदलाव नहीं आया। उस आदिकाल में भी मां, मां ही थी। तब भी वह अपने बच्चों को जन्म देकर उनका पालन-पोषण करती थी। उन्हें अपने अस्तित्व की रक्षा करना सिखाती थी। आज के इस आधुनिक युग में भी मां वैसी ही है।''

अणुव्रत के हस्ताक्षर

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य तुलसी ने अपने समय में कई नई धर्म क्रांति से जुड़ी सुधियों तथा सुविधाओं का सूत्रपात किया। उनमें से अणुव्रत आंदोलन सर्वाधिक प्रभावी अनुष्ठान है जिसकी शुरूआत 01 मार्च 1949 को की। अपने साथ उन्होंने देश के ख्यात-प्रख्यात चिंतकों को जोड़कर इसे पूरे विश्व में प्रचारित किया। उसके बाद उनके उत्तराधिकारी बने आचार्य महाप्रज्ञ ने इसे बौद्धिक सम्पदा से और अधिक समृद्ध किया।

दोनों आचार्यों ने अपने समय में 15 अणुव्रत कर्मियों को 'अणुव्रत प्रवक्ता' से सम्बोधित किया। उनकी सेवाओं का प्रतिष्ठापूर्वक मूल्यांकन कर सामाजिकों में यह सन्देश दिया कि चरित्र निर्माण और जीवनशुद्धि के क्षेत्र में जिनका गतिशील योगदान रहा वे अणुव्रत की आंख-पांख के इतिहास पुरुष के रूप में गौरवास्पद भूमिका के हस्ताक्षर हैं।

सम्पादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट का यह सौभाग्य रहा कि वे एक ऐसे हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अणुव्रत की सुदृढ़ नींव के शिलाखण्ड रहे अपने पिता देवेन्द्रकुमार कर्णावट के घर जन्म लेकर उन समग्र धर्म मीमांसकों, राष्ट्रनेताओं, समाजसेवियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं के प्रत्यक्षदर्शी बने रहे और उनके सान्निध्य सम्बल का दुलार पाते रहे। अपने पिताश्री की तरह वे भी तेरापंथ धर्मसंघ और अणुव्रत के प्रमुख अंग बने। अणुव्रत नामक पत्र का कौशलपूर्वक सम्पादन किया। अणुव्रत प्रवक्ता बने और इस ग्रंथ का गौरवपूर्ण सम्पादन कर अणुव्रत से जुड़े पूरे कालखण्डों को इतिहास-समाज का सुमेरु बना दिया।

इन प्रवक्ताओं में जैनेन्द्रकुमार, यशपाल, देवीलाल सामर जैसों ने अपने कृतित्व से अलग विशिष्ट पहचान भी बनाई। गांधी सेवा सदन, राजसमंद से प्रकाशित 356 पृष्ठों का यह ग्रन्थ अपनी उम्दा सात्विक प्रस्तुति के साथ 300 रुपये मूल्य लिये है।

आदिज्ञान के दीप पर्व विशेषांक

मुम्बई से विगत सत्रह वर्षों से प्रकाशित त्रैमासिक आदिज्ञान में संस्कृति, कला, धर्म, अध्यात्म विषयक सभी तरह की स्तरीय रचनाओं का प्रकाशन बड़ी सुरुचि से संपादक जीतसिंह चौहान कर रहे हैं। इस वर्ष भी दीवाली पर दो भाग प्रकाशित किये हैं। दोनों 112 पृष्ठ लिये हैं।

इनमें 40 आलेखों में दीवाली से सम्बंधित इतिहास, संस्कृति, लोकजीवन, दीपक, लक्ष्मी, मिथक, शृंगार, खान-पान, माटी महिमा, यात्रा वृतांत, अवधारणा, पौराणिकता, टोने-टोटके, मंत्र मांडणें, धर्म, अध्यात्म आदि विषयों पर सारगर्भित रचनाएं प्रकाशित हैं। इसका प्रकाशन स्थल बी-1204, राज होराइजन बिल्डिंग, रामदेव पार्क रोड़, भयंदर (पूर्व) मुम्बई है।

कहावतों के कहकहे (3)

(41) एक चड़ै दूजो उतरै तीजो घाळे टांग / याद घणा दन आवसी घोड़ी थनैं वाण्यां वाळी जान

(42) एक लकड़ी नी बळै

(43) एक वरस रौ सिजारो नै ऊमर री चिंतारणी

(44) एकै साध्यां सब सधै सब साध्यां सध जाय

(45) एक हाथ ऊं ताली नी वाजै

(46) एकला री अलगी चरै

(47) ऐंड्या वाली ऊमर है

(48) एमद्यारी टोपी मेमद्या माथै

वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव का लोकार्पण

उदयपुर। वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव के दूसरे संस्करण का शुभारंभ दिग्गज क्रिकेटर कपिल देव ने नई दिल्ली में किया। इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी, विनीत पाटनी, मोर्केटिंग प्रेसीडेंट शैलेन्द्र मोहता, रवीन्द्रसिंह मेहनोत, तरुणसिंह चौहान तथा जगदीशचंद्र तोषनीवाल भी उपस्थित थे।

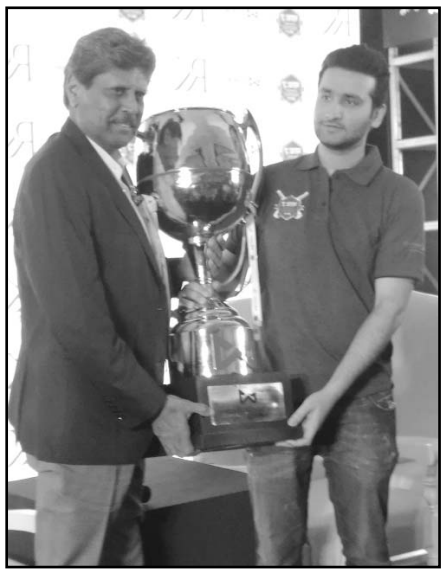

वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी ने बताया कि इस बार के टूर्नामेंट राजस्थान के साथ गुजरात और मध्यप्रदेश में भी होंगे। दुनियाभर के क्रिकेट प्रेमी अब आईपीएल और 20:20 के आगे की सोचने लगे हैं। वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव 7 खिलाड़ी और 7 ओवर का सरल और मनोरंजक मैच है। इसमें से एक महिला खिलाड़ी होने पर 7 रन का बोनस दिया जाएगा।

वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव का पहला चरण काफी लोकप्रिय रहा जिसमें निशक्तजन की एक टीम ने भाग लिया था। यही नहीं, 65 वर्षीय महिला खिलाड़ी मीरांदेवी भी इस टूर्नामेंट का हिस्सा रही थीं। बीकानेर का एम.एस.जी. क्लब उस प्रतियोगिता में विजेता रहा था। इस बार कारीगरों की एक टीम भी भाग लेगी जो वंडर सीमेंट की योजना 'साथी' से जुड़े हुए हैं।

इस साल 48000 प्रतियोगी इस प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। इस प्रतियोगिता के मैच अन्य दो राज्यों में भी खेले जायेंगे और इसका फाइनल उदयपुर में होगा। 16 छंटी हुई टीमों के बीच 15 मैच सम्पन्न होने के बाद एक विजेता टीम तहसील की टीम के तौर पर उभरेगी।

तहसील की टीमें जिला टीम चुने जाने के लिए एक दूसरे से भिड़ेंगी। जिला टीम जोनल लेवल पर मिलेंगी और जोनल टीमें प्लेऑफ मुकाबलों के लिए उदयपुर में मिलेंगी। फाइनल मुकाबला उदयपुर में खेला जाएगा और टूर्नामेंट के विजेता का नाम घोषित किया जाएगा।

डॉ. सिंघीज कॉस्मेटिक एण्ड लेजर सेंटर का शुभारंभ

उदयपुर। अत्याधुनिक लेजर उपकरणों, नई तकनीक से देश के कुछ चुनिंदा खास शहरों में होने वाली विश्वस्तरीय उपचार सुविधाएं अब उदयपुर में भी सुलभ होगी। इस क्षेत्र में पिछले चार दशकों से अनवरत सेवाएं दे रहे डॉ. एम. के. सिंघीज कॉस्मेटिक एवं लेजर सेंटर की सभी सेवाओं का लाभ अब झीलों की नगरी उदयपुर में मिल सकेगा। डॉ. सिंघीज कॉस्मेटिक एवं लेजर सेंटर का उद्घाटन रविवार को रोड नंबर-7, नवभारत स्कूल, अशोकनगर उदयपुर में हुआ।

इस अवसर पर अपने अनुभव साझा करते हुए डॉ. एम. के. सिंघी एवं डॉ. अर्पित सिंघी ने कहा कि यह एकमात्र लेजर सेंटर है जहां सभी प्रकार की लेजर टेक्नोलॉजी द्वारा सभी प्रकार के कॉस्मेटिक प्रक्रियाएं उपलब्ध करवाई गई हैं। इस सेंटर पर जो लेजर उपकरण उपलब्ध हैं वह अत्याधुनिक तकनीक के साथ ही विश्वस्तरीय गुणवत्ता मानकों पर प्रमाणित, जांचें, परखे व सराहे गए हैं। इस सेंटर पर उदयपुर, अजमेर, कोटा, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, डूंगरपुर एवं मध्यप्रदेश के मरीज के लिए जो विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं वे किसी वरदान से कम नहीं हैं। पिछले एक माह में 70 मरीज अपना स्थायी समाधान लेजर पद्धित द्वारा करवा चुके हैं।

डॉ. एम.के सिंघी ने बताया कि उनसे जोधपुर में एक लाख से अधिक मरीज अपना उपचार करवा चुके हैं जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। इस सेंटर पर उदयपुर में बहुत ही किफायती दामों पर लेजर सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं जो महानगरों सहित देश के कई बड़े शहरों की तुलना में दस गुना कम है। हाल ही में कुवैत से एक आर्किटेक्ट अनु पटेल उदयपुर में उपचार कराने इस केंद्र पर आईं। यहां उन्होंने डायोड द्वारा परमानेंट हेयर रिडक्शन करवाया। गौरतलब है कि डॉ. एम.के.सिंघी मेडिकल कॉलेज जोधपुर में वरिष्ठ प्रोफेसर व पूर्व विभाग प्रमुख भी रह चुके हैं।

डॉ. अर्पित सिंघी ने बताया कि इस सेंटर पर डाइयों व छाया को कम करना, सतही मुहासों के निशान हटाना, मुहासों के बाद की लाली को हटाना, आंखों के नीचे के काले घेरे हटाना, सूर्य की किरण व धूल-मिट्टी से हुए दागों को हटाना, पार्टी पील, रसायनिक पील, तुरंत चेहरे पर चमक, गर्भावस्थ में पड़े निशान, जले, चोट व ऑपरेशन के निशान, लेजर पिलींग, कील-मुहासों के निशान, त्वचा में निखार लाना, लचीली त्वचा को पुन: आकर देना, हाथ की त्वचा का कायाकल्प, टेटू हटाना, झड़ते बालों को रोकना, कार्बन फोटो फेशिनल, आंखों के नीचे के काले घेरे, जन्म चिह्न को हटाना, मस्से के तिल हटाना, काले होठों को गुलाबी करना डायोर्ड लेजर द्वारा अनचाहे बालों से मुक्ति आदि सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं है।

शोभायात्रा में गूंजे संत कबीर के दोहे

उदयपुर। बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोई, बोली एक अनमोल है जो बोली जाने, जहां दया तहां धर्म है जहां लोभ तहां पाप जैसे संत कबीर के दोहे गाते कबीर के अनुयायियों ने शहर में गाजे-बाजे के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा विद्या प्रचारिणी सभा मैदान से शुरू होकर कुम्हारों के भट्टा, सूरजपोल बापूबाजार, टाउन होते हुए गन्तव्य पर पंहुची। शोभायात्रा में 500 से ज्यादा महिलाओं ने सिर पर कलश के साथ जबकि पुरूष धवल वस्त्र और सिर पर पगड़ी धारण किये शामिल हुए। इसके पीछे देश के अलग अलग राज्यों से आये कबीर पंथ से जुड़े संत हाथों में सतनाम की झंडी लिये हुए चल रहे थे। उनके पीछे ऊंट ओर घोड़ों पर साधु-संत कबीर का संदेश जन जन तक पंहुचा रहे थे। शोभायात्रा का जगह जगह पर फूल मालाओं से स्वागत किया गया।

सद्गुरु कबीर मंडल और विधा प्रचारिणी सभा के सयुक्त तत्ववाधान में आयोजित संत कबीर धर्मदास साहेब वंशावली पंच शताब्दी महोत्सव के सचिव लोकश चौधरी ने बताया कि शोभायात्रा के बाद प्रकाश मुनि नाम साहब के प्रवचन हुए। शाम को भजन संध्या के माध्यम से गुरु वाणी का बखान किया गया।

वोडाफोन सुपरवीक प्लान लॉन्च

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने सुपरवीक प्लान का लॉन्च किया है, जिसके द्वारा उपभोक्ता मात्र 69 रूपये में अनलिमिटेड कॉलिंग और ढेर सारे डेटा का फायदा पा सकते हैं।

वोडाफोन इण्डिया में एसोसिएट डायरेक्टर-कन्ज़्यूमर बिजनेस अवनीश खोसला ने कहा कि वोडाफोन सुपरवीक के साथ उपभोक्ता मात्र 69 रुपये प्रति सप्ताह की कीमत पर किसी भी नेटवर्क पर अनलिमिटेड लोकल एवं एसटीडी कॉल्स के साथ 500 जीबी डेटा मुफ्त पा सकते हैं। उपभोक्ता इस पैक की दोबारा अनलिमिटेड खरीद के साथ अपने हर सप्ताह को सुपरवीक बना सकते हैं। श्री खोसला ने कहा कि हम उपभोक्ताओं को सर्वश्रेष्ठ नेटवर्क, उत्कृष्ट सेवाओं का अनुभव प्रदान करना चाहते हैं। नए सुपरवीक पैक के रूप में ऐसा किफ़ायती और पॉकेट फ्रैंडली अनलिमिटेड प्लान लेकर आए हैं जो निश्चित रूप से हमारे सभी प्रीपेड उपभोक्ताओं को खूब लुभाएगा। इसके ज़रिए उपभोक्ता अपने दोस्तों और प्रियजनों के साथ जुड़े रह सकते हैं और हमारे बेस्ट एवर नेटवर्क पर वोडाफोन सुपरनेट की सेवाओं का शानदार अनुभव पा सकते हैं। सुपरवीक पैक सभी रीटेल आउटलेट्स, यूएसएसडी, वेबसाईट एवं माय वोडाफोन ऐप पर उपलब्ध है।

जिंक को 2,545 करोड़ का शुद्ध लाभ

उदयपुर । हिन्दुस्तान जिंक के निदेशक मंडल ने 30 सितंबर को समाप्त हुई छह माही और दूसरी तिमाही के वित्तीय परिणामों की घोषणा की। इसमें दूसरी तिमाही में कंपनी ने 2,545 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ हुआ है जो कि चालू वर्ष की पहली तिमाही की समान अवधि की तुलना में 36 प्रतिशत तथा गत वर्ष की समान तिमाही की तुलना में 34 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। वहीं दूसरी तिमाही के दौरान कंपनी ने 5,232 करोड़ रुपए का राजस्व अर्जित किया जो गतवर्ष की समान अवधि की तुलना में 37 प्रतिशत अधिक दर्शाता है।

राजस्व में वृद्धि एल एमई में धातु की कीमतों में सकारात्मक वृद्धि के परिणामस्वरूप हुई है। कंपनी के निदेशक मण्डल ने शेयरधारकों को 100 प्रतिशत अंतरिम लाभांश देने की घोषणा की है जो 2 रुपए के प्रति इक्विटी शेयर पर 2 रुपये प्रति शेयर अंतरिम लाभांश है। जिंक के चेयरमैन अग्निवेश अग्रवाल ने कहा कि पिछले पांच साल के सीएजीआर के संबंध में खनन धातु उत्पादन में 39 प्रतिशत की वृद्धि हुई हैं और हम उम्मीद करते हैं कि इस वर्ष भूमिगत खदान की प्रगति से 60 प्रतिशत से अधिक उत्पादन होने की संभावना है।

जिंक को वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही में खनिज धातु का उत्पादन 2,19,000 टन हुआ जो गतवर्ष की समान अवधि की तुलना में 14 प्रतिशत अधिक है। वहीं छह माही के दौरान 452,000 टन खनिज धातु का उत्पादन हुआ जो कंपनी की गत वर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में 42 प्रतिशत अधिक है। इसी तरह एकीकृत रिफाइंड जस्ता धातु 192,000 टन उत्पादन हुआ, जो गतवर्ष की समान अवधि की तुलना में 29 प्रतिशत अधिक है। एकीकृत सीसा धातु 38,000 टन उत्पादन हुआ जो गतवर्ष की समान अवधि की तुलना में 24 प्रतिशत अधिक है। तिमाही के दौरान एकीकृत चांदी धातु का उत्पादन 140 मीट्रिक टन हुआ जो गतवर्ष की तुलना में 31 प्रतिशत अधिक है।

999 रूपये का 4जी स्मार्टफोन लॉन्च

उदयपुर। भारत के प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता वोडाफोन एवं माइक्रोमैक्स ने भारत के सबसे कम कीमत के 4जी स्मार्टफोन का लॉन्च किया, जो मात्र 999 रूपये में वोडाफोन सुपरनेट 4जी कनेक्शन के साथ उपलब्ध होगा। यह स्मार्टफोन 'भारत 2 अल्ट्रा' माइक्रोमैक्स की कामयाब 4जी स्मार्टफोन 'भारत सीरीज़' का नया स्मार्टफोन है जो सबसे किफ़ायती सेगमेन्ट में बेहतर कैमरा, बैटरी और डिस्प्ले का विकल्प पेश करेगा। वोडाफोन इण्डिया में एसोसिएट डायरेक्टर-कन्ज़्यूमर बिजनेस अवनीश खोसला ने कहा कि वोडाफोन और माइक्रोमैक्स की इस साझेदारी के तहत वोडाफोन के नए एवं मौजूदा उपभोक्ताओं को 2,899 की कीमत पर माइक्रोमैक्स भारत-2 अल्ट्रा स्मार्टफोन खरीदना होगा और 36 महीनों के लिए कम से कम 150 रूपये प्रतिमाह का रीचार्ज कराना होगा। 18 महीने खत्म होने पर उपयोगकर्ता को वोडाफोन एम-पैसा वॉलेट में 900 रूपये और अगले 18 महीने बाद 1,000 रूपये कैशबैक मिलेगा।

इस कैशबैक का इस्तेमाल उपभोक्ता डिजिटल लेनदेन अथवा नकद निकासी के लिए कर सकते हैं। माइक्रोमैक्स के सह-संस्थापक राहुल शर्मा ने कहा कि पहली पीढ़ी के स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं को ध्यान में रखते हुए हमने भारत सीरीज़ को बाज़ार में उतारा। वोडाफोन के सथ यह साझेदारी निश्चित रूप से स्मार्टफोन के इस्तेमाल को बढ़ावा देगी और लोग अपने फीचर फोन को स्मार्टफोन में अपग्रेड करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

राजस्थान सरकार और ओला में समझौता

उदयपुर। मोबाइल ऐप ओला ने राजस्थान में 10,000 ड्राइवर-उद्यमियों की पहचान और उनके कौशल को पहचानने के लिए राजस्थान सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। राजस्थान सरकार के स्थानीय निकाय निदेषालय और ओला के बीच यह समझौता राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एनयूएलएम) के तहत किया गया है जो पूरे राजस्थान और देश के अन्य हिस्सों में युवाओं को रोजगार के मौके प्रदान करता है।

ओला के वाइस प्रेसीडेंट- स्किलिंग एंड इंडस्ट्रीयल रिलेशंस जी एस उप्पल ने कहा कि साझेदारी के तहत, राजस्थान सरकार का स्थानीय स्वशासन विभाग समाज में चुनौतीपूर्ण पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों की पहचान करेगा और आईएल एंड एफएस कौशल विकास निगम लिमिटेड (आईएल एंड एफएस स्किल्स) के माध्यम से उन्हें कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। आईएल एंड एफएस स्किल्स, आईएल एंड एफएस शिक्षा और प्रौद्योगिकी सेवा लि. (आईएल एंड एफएस एजुकेशन) और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के बीच एक संयुक्त उद्यम है। कुशल पेशेवरों को ओला के माध्यम से ड्राइवर और उद्यमियों के रूप में उच्च मांग वाले विभिन्न बाजारों जैसे मुंबई, दिल्ली और अन्य शहरों के साथ जोड़ा जाएगा।

3000 पेशेवरों का पहला बैच ओला द्वारा अपने मुंबई बाजार में शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, ओला ऑन-ग्राउंड इवेंट्स को व्यवस्थित करेगी, संचार मॉड्यूल बनाएगी, और अपेक्षित प्रशिक्षण और कौशल प्राप्त करने के लिए इच्छुक पार्टनर्स के लिए एक स्वस्थ और अनुकूल परितंत्र तैयार करेगी।

राजस्थान सरकार के स्थानीय निकाय विभाग के निदेशक और संयुक्त सचिव पवन अरोड़ा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के कुशल निर्देशन के तहत, राज्य में कौशल से जुड़ी विभिन्न गतिशील पहल पर काम किया जा रहा है और हमें विश्वास है कि ओला के साथ हमारी साझेदारी से आर्थिक विकास के लिए सरकार के प्रयासों को गति मिलेगी और राज्य के हजारों स्त्री-पुरुषों के लिए प्रभावी ढंग से उद्यमी बनने का अवसर भी उपलब्ध होगा।

असल इतिहास के .....

(पृष्ठ दो का शेष)

अगर सामग्री प्रताप शोध प्रतिष्ठान के लिए उपलब्ध कराई जाती है तो न केवल इसके परीक्षण की व्यवस्था की जायेगी बल्कि चिरकाल तक यह संपदा सुरक्षित रहेगी और शोधार्थी इसका उपयोग कर लाभान्वित भी होंगे तथा ठिकाने की व्यवस्था आदि उपलब्धियों का बोध होने से समूचे भारत में ठिकाने का नाम होगा। इस प्रकार ठिकानेदारों को समझाने पर वे सामग्री देने को तैयार हो गये और ठिकाना भींडर, पीपलिया, अठाणा, गोगुन्दा, विजयपुर, सरदारगढ़, दौलतगढ़, डाक्ला, मोही के अतिरिक्त देराश्री एवं मथुरा संग्रह के दस्तावेज, ठिकानों की बहियों तथा पट्टे-परवाने आदि सामग्री प्रताप शोध प्रतिष्ठान में संग्रहीत कराने में सफलता मिली। ठिकाना अठाणा और सरदारगढ़ में तो इतनी बहियां थीं कि ट्रक भरकर लानी पड़ी।'

मेवाड़ के प्रसिद्ध सौलह ठिकानों में मेरे गांव कानोड़ का ठिकाना कई दृष्टियों से अव्वल रहा। वहां का जब मैंने पहलीबार संग्रह देखा तो चकित रह गया किंतु मेरा वह क्षेत्र नहीं होने से मैं उसका कोई उपयोग नहीं कर पाया। बाद में डॉ. जे. के. ओझा जो वहीं पं. उदय जैन महाविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक थे, ने गण्या महाराज की दुकान से नमकीन खरीदी तो वह ठिकाने की ही किसी बही के कागज की पुड़िया में बंधी थी। इस पर डॉ. ओझा ने गण्या महाराज से संपर्क किया तो पता चला कि उन्होंने वहां के ठिकाने की सारी रद्दी खरीदी हुई है। यह उसी का रद्दी में उपलब्ध बही का कागज है। इस पर डॉ. ओझा ने गण्या महाराज के पास उपलब्ध सारी रद्दी खरीदनी चाही। गण्या महाराज डॉ. ओझा के लिए रद्दी का महत्व समझ गये अत: उन्होंने उसकी मनचाही उल्टी-सीधी कीमत बताई। इस पर डॉ. ओझा ने सारी रद्दी में से कुछ को अपने संग्रह के लिए खरीदी और एक ट्रक भर महाराजकुमार डॉ. रघुवीरसिंहजी के लिए खरीद कर स्वयं सीतामऊ ले गये।

इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि डॉ. हुकमसिंहजी ने कितनी मुसीबतें उठाकर, हाय बाबा कर ठिकानेदारों से सामग्री एकत्रित की और उस सामग्री को संवार कर, पढ़कर उसमें से कुछ को सूप की तरह निखारा और कबाड़े से कंचन बनाया। ऐसी चीजों का महत्व कोई पारखी ही समझ सकता है। जैसे जवाहरात का पारखी जवेरी, सोने का पारखी सुनार और धूल को बार-बार धोकर उसमें से कीमती पदार्थ खोजने वाला धूलधोया ही हो सकता है वैसे ही डॉ. भाटीजी ने अपने निज को समग्रत: प्रताप प्रतिष्ठान के लिए समर्पित कर उसे अलभ्यतम बनाया।

उदयपुर से जाने के बाद डॉ. भाटीजी से मेरा ठीक से कहीं मिलना हुआ हो, मुझे याद नहीं पड़ रहा किंतु उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों तथा प्रकाशनों से मेरी बराबर जानकारी बनी हुई रही।

आज मैं जब उनके बारे में सोचता हूं तो जादुई अचरज से हगेमगे होता हूं। उन्होंने जिस अथक निष्ठा, अटूट तल्लीनता, अनथक ईमानदारी, पुण्यार्जित पुरुषार्थ और सर्वस्व समर्पण लेकर जितना जैसा अतुलनीय कार्य किया वैसा किसी अन्य ने किया हो, नहीं जान पड़ता। मेरे जैसे कई लोग हैं जो उनसे प्रेरित तथा प्रभावित होकर अपने-अपने क्षेत्र में कर्मशील एवं कार्यशील बने हुए हैं। कर्नल टॉड ने राजस्थान के पुरातन वैभव और विरासत को लेकर जिस मनोयोग से इतिहास-सम्मत कार्य किया वह प्रकाश स्तंभीय योगदान के रूप में सदा-सर्वदा के लिए स्थापित हो गया। डॉ. हुकमसिंह भाटी ने उस प्रकाश स्तंभ में अनेक किरणों का उजास देते उसे जो विस्तार दिया उसका फैलाव आगे आने वाली पीढ़ियों तक के लिए नाज बना रहेगा।

ग्राहक सेवा महोत्सव का आयोजन

उदयपुर। ग्राहकों को इनोवेटिव समाधान प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करते हुए टाटा मोटर्स ने ग्राहक सेवा महोत्सव शुरू करने की घोषणा की है। यह ग्राहकों और चैनल पार्टनर्स के बीच काफी

लोकप्रिय आयोजन है, जिसके तहत् टाटा मोटर्स के सभी वाणिज्यिक वाहनों के मालिकों के लिए 23 से 31 अक्टूबर तक भारतभर में सभी 1500 वर्कशॉप्स पर वाहनों की मुफ्त जांच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। ग्राहक सेवा महोत्सव का शुभारंभ 23 अक्टूबर को राष्ट्रीय ग्राहक सेवा दिवस के जश्न के तौर पर किया गया था और इस महोत्सव में प्रतिदिन 16,000 से ज्यादा ग्राहक आ रहे हैं।

ग्राहकों को उन्नत अनुभव प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कंपनी ने हाल ही में ग्राहक संवाद अभियान भी शुरू किया है, जिसका उद्देश्य वाणिज्यिक वाहन के ग्राहकों और वाहन बेड़े के मालिकों को इनोवेटिव उत्पादों के बारे में शिक्षित करना है। 9 अक्टूबर को शुरू किए गए इस अभियान के माध्यम से 10 दिनों के अंदर ही 8,000 से ज्यादा ग्राहकों तक पहुंचा जा चुका है। ग्राहक-केंद्रित सालाना पहल, टाटा मोटर्स के मजबूत उत्पाद पाइपलाइन और सुदृढ़ आकांक्षा के मूल्यों से प्रेरित है।

टाटा मोटर्स लि. में सीनियर वाइस-प्रेसिडेंट, कस्टमर केयर (डोमैस्टिक एवं आईबी) सीवीबीयू श्री आर रामाकृष्णन ने कहा कि टाटा मोटर्स में हमारा लक्ष्य निरंतर नई टैक्नोलॉजिज के साथ गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करना है, जिससे हमारे ग्राहकों को बिक्री बाद सेवा का सुखद अनुभव सुनिश्चित हो सके। 1954 में पहले ट्रक को पेश करने के साथ ही टाटा मोटर्स ने ग्राहक अनुभव में सुधार की राह प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ग्राहक संवाद महोत्सव हामरे ग्राहकों और चैनल पार्टनर्स के साथ जुड़ने की एक विशेष पहल है, जिसमें उन्हें विशिष्ट सुविधाएं एवं सेवाएं प्रदान की जाती है। स्पेयर पार्ट्स वितरण के संदर्भ में, हमारा ध्यान दक्षता और सर्विस के स्तर पर सुधार करने पर है।

बजाज आलमंड ड्रॉप्स हेयर ऑइल का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स

उदयपुर। हेयर ऑइल बजाज आलमंड ड्रॉप्स हेयर ऑइल ने 'विश्व की सबसे लंबी हेड मसाज श्रृंखला' बनाने की उपलब्धि हासिल कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज करवाया है। बजाज आलमंड ड्रॉप्स ने यह पहल बालों में नियमित रूप से तेल लगाने के महत्व को प्रचारित करने और महिलाओं के लिये 'तेल लगे बाल अच्छी तरह से पोषित होते हैं', संदेश को प्रेषित करने के लिये की थी। ग्रोवेल्स मॉल, कांदिवली, मुंबई में यह रिकॉर्ड हासिल करने के प्रयास में 500 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया।

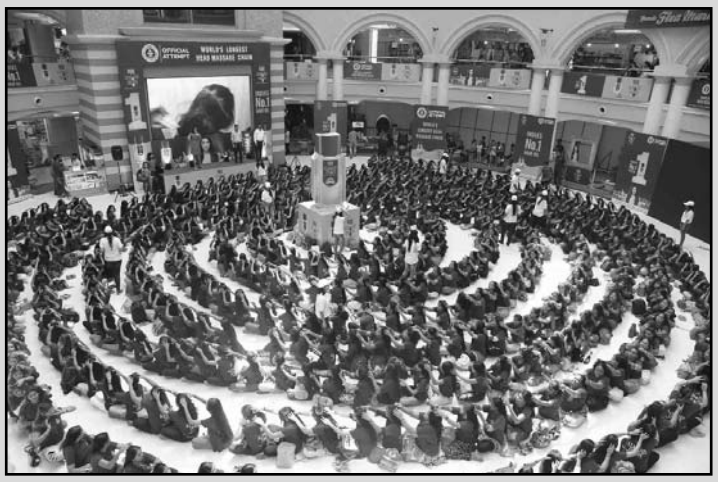

बजाज कॉर्पोरेशन लि. के प्रेसिडेंट संदीप वर्मा ने कहा कि हमारे ब्रांड ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में प्रवेश किया है, इसे लेकर हम बहुत प्रसन्न हैं। बजाज कॉर्पोरेशन में हम स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने और अपने ग्राहकों को अच्छा अनुभव कराने, अच्छा दिखने तथा जीवन में अधिक से अधिक आनंद देने में विश्वास रखते हैं। तेल लगाना भारत में बालों की देखभाल करने का एक जरूरी हिस्सा है, लेकिन कई महिलाएं इसे जटिल और समय खपाने वाला काम मानती हैं। हमारा उद्देश्य भारतीय महिलाओं को एक हल्का तेल प्रदान कर बालों में तेल लगाने की आदत डालना है। बजाज आलमंड ड्रॉप्स की ब्रांड एम्बेसडर परिणीति चोपड़ा ने कहा कि मुझे बजाज आलमंड ड्रॉप्स के साथ जुड़कर गर्व हो रहा है। बजाज आलमंड ड्रॉप्स हेयर ऑइल हल्का है, इसमें बादाम का तेल तथा 300 प्रतिशत अतिरिक्त विटामिन ई है, जो बालों को मजबूत बनाता है।

स्किल इंडिया मिशन को बढ़ावा देंगी 6,655 करोड़ की परियोजनाएं

उदयपुर। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति द्वारा विश्व बैंक समर्थित दो नई योजनाओं - आजीविका संवर्द्धन के लिए दक्षता हासिल करने और ज्ञान बढ़ाने (संकल्प) तथा औद्योगिक मूल्य संवर्द्धन हेतु दक्षता सुदृढ़ीकरण (स्ट्राइव) योजनाओं को मंजूरी प्रदान की गई।

4455 करोड़ रूपये की केंद्रीय प्रायोजित संकल्प योजना में विश्व बैंक द्वारा 3300 करोड़ रूपये ऋण की सहायता शामिल है, जबकि 2,200 करोड़ रूपये की केंद्रीय प्रायोजित स्ट्राइव योजना में विश्व बैंक द्वारा इस योजना की आधी राशि ऋण सहायता के रूप में दी जाएगी।

संकल्प और स्ट्राइव योजनाएं निष्कर्ष आधारित है, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में सरकार की कार्यान्वयन रणनीति को आदानों के साथ परिणामों से जोड़ा गया है। दक्षता प्रशिक्षण के प्रभावी सुशासन और विनियमन शुरू करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा में औद्योगिक प्रयासों को चिन्हित करने के दृष्टिगत काफी लंबे समय से एक राष्ट्रीय रूपरेखा की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय कौशल प्रशिक्षण में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए इस तरह की कई पहलें शुरू कर चुका है जैसे स्मार्ट पोर्टल के माध्यम से मान्यता, केन्द्रीकृत मूल्यांकन एवं प्रमाणीकरण प्रणाली, आईटीआई का आईएसओ प्रमाणीकरण, कुछ राज्यों में ऑनलाईन परीक्षणों की ओर संक्रमण आदि। ऐसे में संकल्प और स्ट्राइव जैसी परियोजनाएं ज़िला स्तर तक देश में सुधार लाने में मदद करेंगी।

संकल्प मान्यता और प्रमाणीकरण के लिए राष्ट्रीय निकायों की संस्थापना द्वारा इस आवश्यकता को पूरा करेगी। मान्यता एवं प्रमाणीकरण के लिए निकाय दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक दोनों ही व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वीईटी) की मान्यता और प्रमाणनन का कार्य करेगा। यह संरचना भारत में व्यवसायिक इतिहास में पहली बार विभिन्न केंद्रीय, राज्य और प्राइवेट क्षेत्र के संस्थानों पर ध्यान देगा। जिसके फलस्वरूप गतिविधियों के दोहराव का परिहार होगा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में एकरूपता आएगी और इस प्रकार इसका बेहतर प्रभाव होगा।

ये दोनों परियोजनाएं संस्थागत स्तर पर सुधार लाएंगी तथा दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक रूप से कौशल विकास प्रशिक्षण प्रोग्रामों की गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता को बेहतर बनाएगी।

स्ट्राइव परिणाम एवं सुधार लिंक्ड वित्तपोषण के ज़रिए 500 से अधिक आईटीआई का आधुनिकीकरण करेगी। यह 100 से अधिक चुनिंदा आईटीआई को विश्वस्तरीय मानकों के अनुरूप भी बनाएगी। यह 100 उद्योग चैम्बर्स/क्लस्टर्स को प्रोत्साहित कर प्रशिक्षुता के लिए संस्थागत क्षमता निर्माण पर भी ध्यान केन्द्रित करेगी।

उदयपुर ग्राम में आयेगा युवराज और उसका बेटा सम्राट

पहली बार ऊंटनी के दूध की चाय का मजा मिलेगा

उदयपुर। देशभर में ख्याति प्राप्त मुर्रा नस्ल का नर भैंसा युवराज पहली बार अपने बेटे सम्राट के साथ उदयपुर ग्राम में आयेगा। पशुपालकों में ही नहीं आम जनता में भी युवराज एवं उसके बेटे सम्राट को देखने के प्रति भरी उत्साह है। पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. लक्ष्मणलाल राठौड़ बताया कि ग्राम उदयपुर 2017 में विभाग की ओर से उत्कृष्ट पशुओं की प्रदर्शनी लगेगी। इस अवसर पर आने वाले पशुपालकों को विभागीय कार्यक्रम, योजनाओं एवं नस्लों की विस्तृत जानकारी देते हुए अच्छे पशुपालन के लिए प्रेरित करें।

एक करोड़ का जितना अतुलनीय उतना ही दर्शनीय भैंसा

डॉ राठौड़ के अनुसार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया है। इसके लिए शिविर स्थल पर हर समय पशु चिकित्सा सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएगी। पशुपालन विभाग निदेशालय जयपुर से आये उपनिदेशक प्रचार प्रसार डॉ. जे.एस.सहगल ने ग्राम 2017 की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि विभाग की मुख्य थीम आदिवासी पशुपालकों की कैसे हो आय दुगुनी रहेगी। इसके लिए शिविर में नवाचार,नवीनतम तकनीकी एवं यहा उपलब्ध संसाधनो का समुचित उपयोग कर आय दुगुनी करने की विशेष जानकारी दी जाएगी। बैठक में उदयपुर संभाग के 150 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

इसी आयोजन में पहली बार ऊंटनी के औषधीयुक्त दूध की चाय का आनंद मिलेगा। साकरोदा गांव के जगदीश रेबारी अपनी धर्मपत्नी के साथ ऊँटनी के दूध की चाय की स्टॉल लगायेंगे। रेबारी ने बताया कि ऊंटनी के दूध में औषधीय गुण होने के कारण इसकी निरन्तर मांग बढ़ती जा रही है। रेबारी स्वयं प्रतिदिन 25 लीटर से अधिक दूध रोज उदयपुर में बेच रहे हैं। ऊंटनी के दूध से उन्हें प्रतिमाह अच्छी आमदनी हो जाती हैं।

जगदीश रेबारी ने बताया इसके लिए वे 100 लीटर दूध आसपास से खरीदते हैं।

उदयपुर में 30 रूपये प्रति लीटर की दर से उन्हें प्रतिमाह 50 हजार से अधिक की आमदनी हो जाती है। एक ऊंटनी अगर खुराक अच्छी हो तो दिन में 3-4 बार में 8-10 लीटर दूध प्राप्त किया जा सकता है।

ऊंटनी के दूध में लेक्टों गुण होने से यह सुपाच्य होता है और 8-9 घंटे तक खराब नहीं होता। उसमें जरूरी वसीय अम्ल लिनोलिक एरेलिडिक भरपूर मात्रा में पाया जाता है। प्रचुर मात्रा में लिनोलिक एवं ऐरेकनिडिक लेक्टोपेरोक्सीडेज के कारण रोग प्रतिरोधक क्षमता लिये होता है। ऊंटनी के दूध को नियमित पीने से ऑटिज्म के लक्षणों में कमी आती है। डायबिटिज से लेकर थायराइड, कैंसर तक में उपयोगी है। सर्पदंश के लिये ऊंट के सीरम से एन्टीविनम बनाया जा रहा है। यह हेपेटाइटिस बी एवं सामान्य त्वचा रोगो से भी निजात दिलाने में सहायक है। ऊंटों की घटती संख्या को रोकने में एवं इसकी उपयोगिता को व्यापक बनाने की दृष्टि से साथ ऊँटपालकों को ऊंटपालन के प्रति प्रेरित करते हुए सरकार इस व्यवसाय से समुचित आय अर्जित करने के उपायों पर भी प्रयासरत है। ऊंटनी की उपयोगिता केवल परिवहन एवं पर्यटन तक ही सिमित नहीं रहकर नृत्य एवं दूध के व्यंजनों में भी बढ़ती जा रही है। उदयपुर ग्राम का आयोजन 7 से 9 नवंबर तक किया जा रहा है।

जल स्वावलंबन कार्यों का अवलोकन

उदयपुर में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान से ग्रामीण क्षेत्र जल के मामले में आत्मनिर्भर बने हैं। अभियान के तहत बनी जल संरचनाओं में जल संग्रहित होने से भूमिगत जल स्तर बढ़ा है वहीं आमजन के रोजमर्रा के कामों के लिए जल सुलभ होने लगा है। अभियान से सबसे अधिक राहत कृषक वर्ग को मिली है। अभियान के तहत जमीनी स्तर पर जो कार्य हुए है उनके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। यह विचार राजस्थान नदी बेसिन व जल संसाधन आयोजना प्राधिकरण के अध्यक्ष श्रीराम वेदिरे ने व्यक्त किये। भीण्डर ब्लॉक के उम्मेदपुरा गांव में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के तहत हुए कार्यों के अवलोकन के लिए तेलंगाना से आए राष्ट्रीय स्तर के पत्रकारों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि दल में राष्ट्रीय स्तर के देश के जाने-माने समाचार पत्रों एवं समाचार एजेंसियों के पत्रकार तथा राष्ट्रीय स्तर के एनजीओ के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं। श्रीराम वेदिरे एवं वल्लभनगर विधायक रणधीरसिंह भीण्डर ने यहां 100 हैक्टेयर क्षेत्र में 25 एमपीटी, 2.2 किलोमीटर में स्ट्रेगर्ड ट्रेंचेज, 6.6 किलोमीटर में सीसीटी तथा 3.9 किलोमीटर में डीप सीसीटी का लोकार्पण किया। भीण्डर ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि अभियान के तहत कुओं के जलस्तर में वृद्धि होने से रबी फसल के लिए किसानों को समुचित मात्रा में पानी उपलब्ध हो सकेगा। वे जायद की तथा सब्जियों का उत्पादन भी कर सकेंगे।

सक्का का सूक्ष्म कैरम बोर्ड इण्डिया बुक में दर्ज

उदयपुर के स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का का सोने से निर्मित सूक्ष्मदर्शी लेन्स की मदद से देखे जाने वाला विश्व का सबसे छोटा कैरम बोर्ड एण्ड कैरम मेन, इण्डिया बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज किया गया है।

सक्का ने बताया कि सोने से बने इस कैरम बोर्ड की साईज मात्र 1 गुणा 1 सेन्टीमीटर है तथा इनमें कैरम की 0.5 मिलीमीटर की 19 गोटियां हैं। 150 मिलीग्राम वजन की इस कलाकृति को इण्डिया बुक ऑफ रिकार्ड्स में दर्ज होने पर इण्डिया बुक के मुख्य सम्पादक डॉ. बी.आर. चौधरी द्वारा प्रमाण पत्र, गोल्डन ट्राफी, आई.डी.कार्ड, रिकार्ड्स बुक, बैच एवं दो वाहन स्टीकर्स जारी किये गये।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।